लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आभा

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

हिन्दी पखवाड़ा

आभा

कैसा ये कोरोना आया,
हर तरफ खौफ का है साया।
अमीर हो या गरीब हर किसी को है सताया,
पर क्या हमें प्रकृति के इस स्वरूप ने कुछ सिखलाया?
प्रकृति से न करें खिलवाड़ हमें ये समझ आया?
अगर न समझ पाए हम, प्रकृति की ये माया,
हमारे कर्मों के कारण ही ये हाहाकार है छाया।
नहीं थामेंगे अगर अपनी संस्कृति का दामन अब हम,
तो बेकार है ये विकास,
शोहरत और ये मोह माया।

अप्रैल 2020 - मार्च 2021

सत्यमेव जयते

प्रकाशक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

हरियाणा, चण्डीगढ़

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

अनुक्रमणिका

अंक: 87-90
वर्ष 2020-21
मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

क्र.सं.	विवरण			पृ.सं.
1	संदेश- अमित शाह, गृह और सहकारिता मंत्री, भारत सरकार			04
2	संदेश- मनोहर लाल, मुख्य मंत्री, हरियाणा, चण्डीगढ़			07
3	संदेश- अमरदीप सिंह (कर्नल), अपर महासर्वेक्षक उ.क्षे. कार्यालय एवं अध्यक्ष, नराकास-2, चण्डीगढ़			08
4	संदेश- पूनम पाण्डेय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़			09
5	संदेश- सुशील कुमार ठाकुर, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़			10
6	संदेश- होवैदा अब्बास, प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़			11
7	संदेश- विनीता मिश्रा, महालेखाकार (ले. एवं हक.) हरियाणा, चण्डीगढ़			12
8	संदेश- वी.एस. वेंकटनाथन, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा रक्षा सेवाएं, चण्डीगढ़			13
9	मुख्य संरक्षक की कलम से			14
10	संरक्षक की कलम से			15
11	सम्पादकीय			16
12	पाठकों की कलम से			17
13	आभा परिवार फोटो			20
14	जनसंख्या: अवसर या अभिशाप	लेख	धर्मवीर सिंह	21
15	आस और विश्वास		संकलन	22
16	वसुधैव कुटुम्बकम	लेख	पूर्णिमा सूद	23
17	पति बहुत सताते हैं	कविता	प्रिया शर्मा	24
18	महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियां	लेख	राकेश रंजन मिश्रा	25
19	युवा पीढ़ी और रोजगार	लेख	शशांक गौरव	27
20	ऑक्सीजन	कविता	मनु अनेजा	28
21	भारत में कोरोना की दूसरी लहर	लेख	डॉ. लाखा राम	29
22	चौधरी चरण सिंह	लेख	ललित कुमार	31
23	इंसानियत	कविता	मनमीत कौर	32
24	दोस्तियां	कविता	भावना सूद	33
25	डिजिटलाईजेशन - सकारात्मक या नकारात्मक	लेख	मनु अनेजा	34
26	हिंदी भाषा	कविता	रीना	34
27	5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी	लेख	कुलदीप सिंह जांगड़ा	35

क्र.सं.	विवरण			पृ.सं.
28	अहिंसा	लेख	अंकित खोखर	38
29	जिंदगी सिखाती है	कविता	गौतम कुमार	38
30	पढ़ाई और परवरिश	लेख	कमल अरोड़ा	39
31	मन की अमावस को मिटाकर आत्ममंथन का दीया जलाएं	लेख	मुनीष भाटिया	40
32	दोस्त अब थकने लगे हैं	संकलन	राम गोपाल	41
33	वर्तमान समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता	लेख	मनीष देव	42
34	गमों में भी मुस्कुराना सीखिए	कविता	वीरेंद्र कुमार	43
35	सकारात्मक सोचने की शक्ति	लेख	अविनाश पासी	44
36	रास्ते बनाकर रखना	कविता	मुनीष भाटिया	45
37	काश जिंदगी एक किताब होती	कविता	रीना	45
38	सबसे धनी व्यक्ति	संकलन		46
39	कुछ भी अपना नहीं	कविता	मनमीत कौर	46
40	वेदना	लेख	सोनू कुमार	47
41	जनसाधारण और उपभोक्ता सुरक्षा कानून	लेख	नीशा ढींगरा	48
42	कोरोना कविता	कविता	अमरदीप सिंह	49
43	जीवन का प्रबंधन	कविता	अंकित	49
44	आत्म समर्पण	कविता	कुसुम लता	50
45	खुशनुमा और सफल जिंदगी जीने के तरीके	संकलन		51
46	योग से सहयोग	कविता	राम कुमार	52
47	शांति चित्र	संकलन		52
48	गणतंत्र दिवस 2021 पर 'नकद पुरस्कार' एवं 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी			53
49	गणतंत्र दिवस 2021 पर 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी			54
50	दिनांक 14.09.2020 से 25.09.2020 के दौरान हिंदी पखवाड़ा में पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी			55
51	सेवानिवृत्ति			56
52	श्रद्धांजलि			56

नोट: रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों/संकलनकर्त्ताओं के अपने हैं। संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। अस्वीकृत रचनाएं लौटाने का प्रावधान नहीं है। रचनाओं में आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं।

आवरण पृष्ठ: परिकल्पना - सुश्री शिखा सूद

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

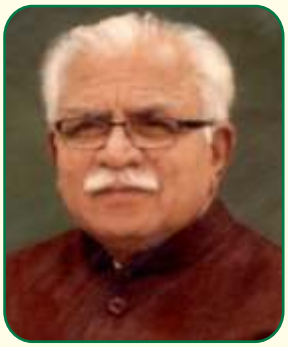

मनोहर लाल
मुख्य मंत्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़

संदेश

मुझे यह जान कर हर्ष हुआ कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा द्वारा हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करने के अलावा कार्यालय की विभागीय एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से पाठकों को अवगत करवाने के उद्देश्य से वर्ष 2020-21 के लिए अपनी हिंदी पत्रिका 'आभा' का नूतन अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

कार्यालय द्वारा गत कई वर्षों से लगातार देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधे रखने और अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता रखने वाली हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार और सरकारी कार्यालयों में इस भाषा के अधिक उपयोग को प्रोत्साहित करने एवं अपनी कार्यालय-प्रणाली का अभिन्न अंग बनाने के लिए किए जा रहे प्रयास सराहनीय है।

नि:संदेह यह कार्यालय हर वर्ष हिंदी पत्रिका आभा का नियमित प्रकाशन और हिंदी पखवाड़े का नियमित आयोजन करके कर्मचारियों व अधिकारियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

आशा है कि पत्रिका का प्रकाशन कर्मचारियों को भावाभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें अपने रोजमर्रा के सरकारी कामकाज में हिंदी भाषा का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रेरित करेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(मनोहर लाल)

अमरदीप सिंह (कर्नल)

अपर महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र कार्यालय
एवं अध्यक्ष, नराकास-2, चण्डीगढ़।

संदेश

मुझे यह जानकर अपार खुशी हो रही है कि नराकास-२, चण्डीगढ़ के सदस्य कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, कार्यालय की विभागीय हिंदी पत्रिका 'आभा' वर्ष 2020-21 के नूतन अंक का प्रकाशन किया जा रहा है एवं इस पत्रिका हेतु मुझे अपने विचार व्यक्त करने का एवं इसका हिस्सा बनने का मौका मिल रहा है।

प्रत्येक राष्ट्र की संस्कृति की पहचान और भावनात्मक एकता का आधार उसकी भाषा होती है तथा राष्ट्रीय एकता, पारस्परिक सदभाव और सौहादपूर्ण संबंधों को सुदृढ़ करने में उस देश की भाषा की अहम भूमिका होती है। दुनिया के तमाम देश इस बात का प्रमाण हैं कि जिस देश ने अपनी संस्कृति और भाषा को सम्मान दिया है उस देश ने विश्व में सम्मान हासिल किया है।

इस प्रकार की हिंदी पत्रिकाएं कार्मिकों के विचारों और भावनाओं को प्रकाशित और प्रसारित करने का मंच है जिससे उन्हें अपने अंदर छुपी हुई प्रतिभा को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। भाषा का संवर्धन मौलिक रचनाओं से होता है इसलिए इस दिशा में इस पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय कदम है।

हिंदी पत्रिका 'आभा' वर्ष 2020-21 के नूतन अंक के प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल, रचनाकारों तथा लेखकों एवं इससे जुड़े हुए सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई देते हुए इस पत्रिका के उज्ज्वल साहित्यिक भविष्य एवं प्रगति की कामना करता हूं।

अमरदीप

(अमरदीप सिंह) कर्नल

पूनम पाण्डेय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'आभा' (वर्ष 2020-21) का प्रकाशन शीघ्र ही होने जा रहा है। इस संबंध में मेरी ओर से अनेक शुभकामनाएं। इस संसार में ज्ञान एक मात्र ऐसा उपागम या धन है जिसका प्रचार-प्रसार इसके अधिकतम व्यय करने पर वृद्धि को प्राप्त करता है। अतएव पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, इसमें सन्निहित रचना व इसका पठन-पाठन भाषायी ज्ञान को समृद्ध करने के प्रयास में मील का पत्थर साबित होता है। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में बढ़ावा तो मिलता ही है साथ ही इससे कार्यालय में सृजनात्मक वातावरण का निर्माण भी होता है। मैं यह कामना करती हूं कि 'आभा' का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं इसके प्रति अभिरूचि और जागरूकता का वातावरण बनाने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(पूनम पाण्डेय)

सुशील कुमार ठाकुर

महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय), चण्डीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' का 87-90 अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इसके लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। यह पत्रिका हमें आपके कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय क्रियाकलापों से अवगत करवाती रहेगी, साथ ही हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी विशिष्टता को कायम रखेगी। हिंदी को समृद्ध बनाने के लिए यह एक सराहनीय कदम है।

राजभाषा के प्रति पूर्ण निष्ठा तथा समर्पण हमारा दायित्व है। राजभाषा हिंदी जनमानस की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी रही है। जनसंचार के सभी माध्यमों में हर ओर हिंदी की प्रतिष्ठा दृष्टिगोचर होती है। अत: हिंदी को समृद्ध बनाने तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी में रूचि बढ़ाने में पत्रिकाएं अग्रणी स्थान रखती हैं। इनमें संकलित रचनाओं में कर्मचारियों की रचनात्मकता प्रतिभा एवं राजभाषा के प्रति वचनबद्धता व्यक्त होती है। 'आभा' पत्रिका ने सदैव इस दिशा में योगदान दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल रहेगी एवं हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग देगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं आगामी प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

सुशील

(सुशील कुमार ठाकुर)

होवैदा अब्बास
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी., चण्डीगढ़

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि आपके कार्यालय में विभागीय हिंदी पत्रिका 'आभा' का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार से संबंधित सभी रचनाकारों, पाठकों और सह संपादकों को बधाई देता हूं।

विभागीय पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर साबित हुई हैं। हिंदी पत्रिका विभागीय सदस्यों को अपना हुनर तराशने का अवसर प्रदान कराती हैं और यह हिंदी भाषा के सुनहरे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक है। ये पत्रिकाएं समधर्मी कार्यालयों के मध्य सामंजस्य का कार्य करती हैं जिससे एक दूसरे कार्यालयों की गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती रहती है।

'आभा' पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों का पुन: अभिनन्दन करता हूं तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

(होवैदा अब्बास)

विनीता मिश्रा

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

हरियाणा, चण्डीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, की हिंदी पत्रिका 'आभा' के नूतन अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। ऐसी विभागीय पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ-साथ कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को भी मंच प्रदान करती है। इसके साथ-साथ कार्यालय में होने वाली सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से भी अवगत कराती हैं। हिंदी भारत की सर्वोत्कृष्ट संपर्क भाषा है और देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली एवं समझी जाती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका 'आभा' का यह अंक भी पूर्व की तरह राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान देगा।

पत्रिका के संपादन एवं प्रबंधक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं।

(विनीता मिश्रा)

वी.एस. वेंकटनाथन
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं
चण्डीगढ़।

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' के नवीन अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी पत्रिकाओं का राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अतुलनीय योगदान रहा है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठापूर्वक इसी दिशा में प्रयासरत है। यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को उनकी रचनात्मक प्रतिभा अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी अधिकारियों/कर्मचारियों का अथक परिश्रम सराहनीय है।

आशा है कि इस पत्रिका का यह अंक भी गत अंकों की भांति पाठकों के ज्ञानवर्धन तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

पत्रिका की उतरोत्तर प्रगति एवं सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(वी.एस. वेंकटनाथन)

विशाल बंसल

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

हरियाणा, चण्डीगढ़

मुख्य संरक्षक की कलम से

यह अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व का विषय है कि इस कार्यालय की गृह पत्रिका 'आभा' के 87-90वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इसका निरंतर सफल प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि कार्यालय के अधिकारी और कर्मचारी न केवल हिंदी में कार्य करने में निपुण हैं बल्कि इसके विकास में भी अपना योगदान दे रहे हैं। हिंदी के वास्तविक प्रचार-प्रसार के लिए सरल और सहज हिंदी का प्रयोग करने की आवश्यकता है। तभी इसे अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

हिंदी में कार्य करने वाले कार्मिकों के लिए सकारात्मक एवं प्रेरणात्मक वातावरण बनाने की आवश्यकता है। हमारे लिए हर्ष का विषय है कि पिछले कुछ वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। हमारे देश में भाषायी विविधता है और अंग्रेजी जानने वाले लोगों की संख्या भी अच्छी है। हमें इन सब तथ्यों का ध्यान रखते हुए यह प्रयत्न करना है कि हम अपनी क्षमता का प्रयोग अपनी राजभाषा के संवर्धन में करें। राजभाषा विभाग के द्वारा विकसित स्मृति आधारित सॉफ्टवेयर के जरिए हम इसके प्रयोग को सरल बना सकते हैं।

मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूं। इसके समस्त रचनाकारों और संपादक मंडल को मेरी ओर से बधाई।

विशाल बंसल

(विशाल बंसल)

के.एस. नरसिंहा प्रसाद
उप-महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

संरक्षक की कलम से

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'आभा' के 87-90वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा इसके प्रयोग को सरल व सहज बनाने के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। हिंदी में कार्यालयीन पत्रिका का प्रकाशन इसी की एक कड़ी है, जिसके माध्यम से कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा से परिचय एवं लेखन को प्रोत्साहन मिलता है।

हिंदी शुरू से ही भारत की सामासिक संस्कृति को दर्शाने वाली भाषा रही है और केंद्र सरकार के कार्यालयों में वास्तव में इससे साक्षात्कार होता है। इसके द्वारा हमें अलग-अलग प्रांत के लोगों की साहित्यक प्रतिभा और सांस्कृतिक परंपराओं और विचारों का बोध भी होता है। 'आभा' के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए रचनाकारों को शुभकामनाएं। मुझे आशा है कि आभा का यह अंक पाठकों के लिए पूर्व की भांति ही रूचिकर होगा।

(के.एस. नरसिंहा प्रसाद)

धर्मवीर सिंह

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी कक्ष, कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा) हरियाणा, चंडीगढ़

सम्पादकीय.....

प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारतीय भाषाओं के विकास हेतु प्रयास किए जा रहे हैं। साहित्यिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो हिंदी समृद्ध भाषा है। इंटरनेट के माध्यम से हिंदी भाषा में उपलब्ध साहित्यिक लेख, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं आदि जनता तक आसानी से पहुंच रही हैं। वैश्विक परिवेश में भी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी भाषा ने स्थान बनाया है और इसके प्रयोग में वृद्धि हो रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां विज्ञापनों के जरिए अपना व्यापार बढ़ाने के लिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को अपना रहीं हैं। इस प्रकार भाषा के विस्तार का माध्यम केवल बोल-चाल या अध्ययन-अध्यापन तक सीमित नहीं बल्कि रेडियो, सिनेमा, मीडिया आदि भी इसके माध्यम हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। यह भाषा जन-जन को जोड़ने की भाषा है। इसलिए हिंदी की प्रगति और इसका प्रचार-प्रसार हमारा संवैधानिक दायित्व भी है। हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा अनुवाद को सरल और सहज बनाने के लिए राजभाषा विभाग प्रयत्नशील है और विशेषज्ञों के समन्वय से 'कंठस्थ', 'लीला' आदि जैसे ऐप बनाए गए हैं। हमारे कार्यालय में भी हिंदी की प्रचार-प्रसार के लिए अनेक प्रयत्न किए जा रहे हैं। इस कड़ी में गृह पत्रिका 'आभा' का प्रकाशन एक छोटा सा प्रयास है जिसमें रचनाकारों की प्रतिभा झलकती है, जिसके बिना पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं होता। कार्यालय की अन्य गतिविधियों तथा कार्यकलापों को प्रोत्साहित करने के साथ ही राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करना भी हमारा दायित्व है।

अन्य कार्यालयों से प्राप्त प्रतिक्रियाएं इस बात का प्रमाण हैं कि 'आभा' के पिछले अंकों ने अपने नाम के अनुरूप ही कार्य किया है। आभा के इस अंक को रूचिकर बनाने हेतु पूरी कोशिश की गई है। पाठकों की प्रतिक्रियाएं इसे और भी सुन्दर बनाने में हमारी सहायता करेंगी।

(धर्मवीर सिंह)

पाठकों की कलम से.....

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' के नवीनतम अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्च-स्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। महत्वपूर्ण विषय पर लिखे लेख जैसे - 'मादक पदार्थों का बढ़ता सेवन: एक गंभीर चिंता का विषय' व 'कोराना वायरस, सावधानी ही बचाव है' विशेष रूप से सराहनीय हैं। इसके अतिरिक्त अन्य रचनाएं जैसे 'विद्याकर्म-श्रेष्ठ कर्म' व 'जिम्मेवार कौन' भी पठनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ व कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों की झलकियां अति आकर्षक हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा, चण्डीगढ़ 160 020

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' का 83 से 86वां अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं बहुत ही विचारोत्तेजक, ज्ञानवर्धक तथा साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। श्रीमती पूर्णिमा सूद की 'भाई-भतीजावाद', श्री राकेश रंजन मिश्रा की 'कोरोना वायरस, सावधानी ही बचाव है', श्री मनीष देव की 'प्रवासी मजदूर: मजदूर या मजबूर', श्री गौतम कुमार की 'नई पीढ़ी बनाम पुरानी पीढ़ी' सभी रचनाएं सराहनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पंजाब एवं यू.टी., चण्डीगढ़ 160 017

संदर्भित पत्र के साथ आपकी कार्यालयी पत्रिका 'आभा' की प्रति प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें।

सदैव की भांति आपकी पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय हैं। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ व मुद्रण विशेष रूप से सराहनीय है साथ ही छाया चित्रों का संकलन अति उत्तम है। पत्रिका में संकलित श्री अविनाश पासी जी का संकलन 'माता-पिता का सम्मान', डॉ. लाखा राम जी का लेख 'मादक पदार्थों का बढ़ता सेवन: एक गंभीर चिंता का विषय' और श्री मनु अनेजा जी की कविता 'कोरोना और प्रकृति' विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका के सम्मानित संपादक मंडल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका 'आभा' के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगंधा' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़-160 017

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'आभा' के 83-86 वर्ष 2019-20 अंक की दो प्रतियां प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाएं उत्तम स्तर की हैं, इसके लिए सभी रचनाकार बधाई

के पात्र हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही सुंदर है। 'पत्रिका के मुख पृष्ठ पर दिए गए चित्रों का समूह बहुत सुंदर है जो कोरोना महामारी के दौरान इससे जुड़े नियमों को अपनाने तथा समाज सेवा की भावना को दर्शाता है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर चण्डीगढ़ शहर के विभिन्न स्थानों का दिया गया चित्र भी बहुत सुंदर है, जो शहर की साफ-सफाई तथा सुंदरता का बखान करता है'। हिंदी पखवाड़े की झलकियां तथा विभिन्न कार्यालयी चित्रों ने पत्रिका को और भी निखारा है। पत्रिका भविष्य में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका के सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर तथा लद्दाख, जम्मू-180 001

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'आभा' के 83-86 वर्ष 2019-20 की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का अंक भी पूर्व के अंकों की भांति बेहद ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सारगर्भित, उच्च स्तरीय एवं बेमिसाल हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी वो हैं 'कोरोना वायरस, सावधानी ही बचाव है'। लेख राकेश रंजन मिश्रा, 'माता-पिता का सम्मान' संकलन अविनाश पासी, 'सबसे कीमती चीज' लेख रीना, 'कहां गए देश के संस्कार' कविता अमित लाठर एवं 'नई पीढ़ी बनाम पुरानी पीढ़ी' कविता गौतम कुमार आदि।

आपकी यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है, जिसकी निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड, देहरादून-248 195

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' का 83-86वां अंक मिला सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का यह अंक अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्धक है। रचनाएं भी अत्यंत स्तरीय हैं। इस अंक की सभी रचनाएं शिल्प और कथ्य के स्तर पर बेहद सशक्त हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में 'आभा' महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। सहर्ष धन्यवाद।

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार-800 001

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी 'आभा' के 83-86वें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका का मुद्रण सर्वोत्तम कोटि का है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखापरीक्षा विभाग, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर-302 005

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' वर्ष 2020-21 की दो प्रतियां प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रूचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर - 493 111

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' के अंक की दो प्रतियां प्राप्त हुई, हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सामग्री जैसे सुश्री पूर्णिमा सूद का लेख 'भाई-भतीजावाद', श्री तिलक राज जसवाल द्वारा रचित लेख 'चंद्रमा एवं उपवास', सुश्री कुसुम द्वारा रचित कविता 'लॉकडाउन' और श्रीमती भावना सूद द्वारा रचित कविता 'मेरी प्रिय बेटी' विशेष रूप से सराहनीय हैं। सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल, तिरूवनन्तपुरम- 695 001

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'आभा' के 83-86वें अंक 2019-20 की प्राप्त हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएं अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड का कार्यालय, रांची- 834 002

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की सभी रचनाएं पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। पत्रिका का मुद्रण एवं संपादन श्रेष्ठ है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, उद्योग एवं कारपोरेट कार्य, ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली-110 002

आभा परिवार

श्री विशाल बंसल, प्रधान महालेखाकार

मुख्य संरक्षक

श्री के.एस. नरसिंहा प्रसाद, उप-महालेखाकार

संरक्षक

श्री धर्मवीर सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रधान संपादक

श्री कृष्ण सिंह, हिंदी अधिकारी

संपादक

सुश्री पूर्णिमा सूद, पर्यवेक्षक

उप संपादक

श्री राकेश रंजन मिश्रा, वरि.अनुवादक

सहायक संपादक

श्री शशांक गौरव, कनि.अनुवादक

सहायक संपादक

श्री देवीदत्त जोशी, सहा.पर्यवेक्षक

सहायक संपादक

जनसंख्या: अवसर या अभिशाप

धर्मवीर सिंह

विश्व की वर्तमान जनसंख्या 7.9 अरब है जोकि जल्द ही 8 अरब होने जा रही है। आज संपूर्ण विश्व जनसंख्या वृद्धि के कारण संसाधनों की कमी से जूझ रहा है। हर क्षेत्र यथा भोजन, विद्युत, भूमि आदि में संकट दिन-प्रतिदिन मांग बढ़ने के कारण गहराता जा रहा है। पांच महाद्वीपों में निवास करने वाली मानव सभ्यता पिछले 100 वर्षों में ही लगभग 4 गुना हो चुकी है। सबसे अधिक जनसंख्या एशिया महाद्वीप की है जहां 4.6 अरब लोग निवास करते हैं। विश्व के प्रथम 10 सर्वाधिक जनसंख्या वाले देशों में 5 (चीन, भारत, इन्डोनेशिया, पाकिस्तान और बांग्लादेश) इसी महाद्वीप में स्थित हैं, जिसमें 3 भारतीय उपमहाद्वीप के हैं। वर्ल्ड पॉपुलेशन क्लॉक की सांख्यिकी के अनुसार रोजाना अनुमानतः 3.5 लाख बच्चे पैदा होते हैं और 1.5 लाख लोगों की मृत्यु होने पर 2 लाख की अतिरिक्त आबादी दैनिक रूप से बढ़ती है, जिसका सीधा असर उपलब्ध संसाधनों पर पड़ता है। सबसे विकट समस्या भारत की है जिसकी आबादी संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार 2025 तक चीन को पछाड़ते हुए सर्वोच्च स्थान पर पहुंच जाएगी। भारत की जनसंख्या दूसरे सबसे बड़े महाद्वीप अफ्रीका (जिसमें 54 देश शामिल हैं और जिसका क्षेत्रफल 30,370,000 वर्ग कि.मी. है) की संपूर्ण आबादी से भी 10 करोड़ अधिक है। वहीं भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग कि.मी. है।

उत्तर प्रदेश जिसकी जनसंख्या 22 करोड़ है, यदि इसे एक देश के रूप में देखा जाए तो पूरे विश्व में यह प्रथम पांच देशों में गिना जाएगा। जिसकी जनसंख्या विश्व के सबसे बड़े देश रूस से भी 7 करोड़ अधिक है। क्षेत्रफल के अनुसार देखें तो पूरे रूस में 71 उत्तर प्रदेश समावेशित हो सकते हैं। यदि हम प्रति वर्ग कि.मी. जनसंख्या घनत्व की बात करें तो पाएंगे कि बहुत से बड़े देशों में यह आंकड़ा अत्यंत कम है जैसे मंगोलिया का 2 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी., ऑस्ट्रेलिया में 3, कनाडा में 4, कजाखिस्तान में 7, रूस में 8, सऊदी अरब में 16 और वहीं चीन में प्रति वर्ग कि.मी. 145 व्यक्ति है। भारत में यह आंकड़ा 404, पाकिस्तान में 293 और बांग्लादेश में प्रति वर्ग कि.मी. निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या 1096 है। पूरे न्यूज़ीलैंड की आबादी 49 लाख है जो कि न जाने कितने शहरों से भी कम है। कहने का तात्पर्य है कि लोग जितने कम होंगे संसाधनों की प्रचुरता उतनी ही अधिक रहेगी। यदि हम खुशहाल देशों अधिकांशतः यूरोपीय देश जैसे नार्वे, फिनलैंड, स्वीडन, स्विट्ज़रलैंड आदि पर नज़र डालें तो देखेंगे कि उनकी जनसंख्या नियंत्रित है जिससे वहां की सरकारें उनके कल्याण हेतु शिक्षा, चिकित्सा, मूलभूत आवश्यकताएं आदि को बहुत ही बेहतर तरीके से उपलब्ध करा पाती हैं। उनकी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ है, राजनीतिक उथल-पुथल न के बराबर है और अनुकूल वातावरण होने के कारण पूरे विश्व में वहां की जीवन गुणवत्ता को बहुत ही उच्च स्तर का माना गया है।

जनसंख्या अधिक होने के लाभ कम और नुकसान ज्यादा है। उदाहरण के रूप में जैसे दो परिवारों की मासिक आय 10,000/- रुपये है। पहले परिवार में चार सदस्य हैं तो दूसरे परिवार में दस सदस्य हैं। यदि पहले परिवार के अनुसार देखा जाए तो प्रति व्यक्ति उपलब्ध राशि 2500/- होती है, वहीं दूसरे परिवार में यह 1000/- ही होती है। अतः समान आय होने के बावजूद पहले परिवार के पास क्रय शक्ति अधिक है और वे अपनी सुख-सुविधाओं को अपनी आवश्यकतानुसार बढ़ा सकते हैं तथा उनके पास संसाधनों की कमी भी नहीं आएगी। वहीं दूसरे परिवार में उसके सदस्यों को हर वस्तु की कमी का सामना करना पड़ेगा। सीधे तौर पर उसका असर उनकी जीवन शैली, शिक्षा, स्वास्थ्य, मूलभूत सुविधाओं, खानपान, वस्त्रों आदि पर भी पड़ेगा जो उनके भविष्य को

भी प्रभावित करेगा। यह समीकरण इतना सरल होने के बावजूद किन्हीं कारणों से इतना गूढ़ कर दिया गया है कि कोई भी इस समस्या को समस्या के तौर पर नहीं देखता। वह तो इसे एक अवसर या संसाधन के रूप में देखना चाहता है जिसका प्रमुख कारण वोट बैंक की राजनीति है। कोई भी सरकार आए पर स्थिति जस की तस बनी रहती है क्योंकि इस पर कोई गंभीरता से विचार नहीं करता।

कुछ लोग अधिक जनसंख्या को संसाधन के रूप में देखते हैं किंतु यह तथ्य भी कुछ सीमा तक ही सार्थक हो सकता है। उसके बाद यह विनाश का कारण बनता जाएगा क्योंकि अधिक जनसंख्या हर वस्तु पर दबाव डालेगी। वे प्राकृतिक स्रोत, जल, भोजन, भूमि आदि हो सकते हैं। एक प्रचलित भविष्यवाणी भी की गई है जिसमें कहा गया है कि तृतीय विश्व युद्ध जल के लिए लड़ा जाएगा। जल संकट बहुत ही गंभीर समस्या बनती जा रही है। विश्व की ¾ आबादी को पीने लायक स्वच्छ पानी उपलब्ध नहीं है। ऊष्ण और मरुस्थलीय क्षेत्रों में बारिश की कमी के कारण जल संचय न होने से स्थिति और अधिक भयावह है। जल के अलावा और भी रोज़मर्रा की वस्तुओं पर मांग अधिक और आपूर्ति कम होने से महंगाई भी बढ़ती है। पिछले वर्ष लॉकडाउन में भी कहीं-कहीं आपातकालीन परिस्थितियां देखने को मिली। जैसे दुकानों पर खाने-पीने की वस्तुओं की एकाएक मांग बढ़ गई। लोगों ने आटा, चावल, चीनी इत्यादि जैसी रोजमर्रा की वस्तु का अत्याधिक और अनावश्यक भंडारण शुरू कर दिया। यह सब इसलिए कि हमारी जनसंख्या का बहुत सा भाग निरक्षर है और वह सब एक दूसरे की देखादेखी करने लगते हैं। यह एक आपातकालीन स्थिति जैसी थी जो कि जागरूकता की कमी के कारण हुई।

जनसंख्या को नियोजित करने के लिए शिक्षा और जागरूकता बहुत जरूरी है और इसके लिए कड़े कानून का प्रावधान होना भी अति आवश्यक है। वर्तमान जनसंख्या का प्रभावी रूप से उपयोग करने के लिए मानव संसाधन को सही दिशा में ले जाने के लिए प्रत्येक क्षेत्र का विश्लेषण करके विशिष्ट क्षेत्रों में उत्पादन क्षमता बढ़ाकर रोजगार सृजित किए जा सकते हैं। इसके अलावा, कौशल विकास पर ज़ोर देकर प्रत्येक व्यक्ति को उसकी काबिलियत के आधार पर और अधिक दक्ष बनाया जाए जिससे न केवल इस समस्या का कुछ हद तक समाधान होगा बल्कि प्रत्येक नागरिक मात्र एक संख्या न होकर देश हित में अपना विशिष्ट योगदान प्रदान कर सकेगा।

आस और विश्वास

संकलित

प्रथम विश्व युद्ध के सैनिक का हृदय भय से सहम गया जब उसने अपने पुराने मित्र को युद्धक्षेत्र में देखा। अपने ऊपर से लगातार चल रही गोलियों के बीच बंकर में रहते हुए सैनिक ने अपने लेफ्टिनेंट से पूछा कि क्या वह दोनों सीमाओं के बीच "तटस्थ भूमि" (नो मैन्स लैंड) में फंसे अपने साथी को लाने के लिए वहां जा सकता है?

तुम जा सकते हो। "लेफ्टिनेंट ने आज्ञा देते हुए कहा, परंतु मुझे नहीं लगता कि इसका कोई फायदा है। तुम्हारा मित्र लगभग मर चुका है और तुम भी अपना जीवन दांव पर लगा रहे हो। लेफ्टिनेंट की सलाह का कोई प्रभाव नहीं हुआ और सैनिक चला गया। चमत्कारिक रूप से वह अपने मित्र के पास पहुंचने में कामयाब रहा और उसे अपने कंधों पर लादकर अपनी टुकड़ी के बंकर में वापस ले आया। दोनों बंकर के तले में एक साथ घायल पड़े थे, अधिकारी ने घायल सैनिक का निरीक्षण किया और फिर उसके मित्र को देखा। मैंने बोला था न कि इसका कोई फायदा नहीं होगा। उसने कहा- "तुम्हारा मित्र मर चुका है और तुम भी बुरी तरह घायल हो।"

'फिर भी, इसका फायदा हुआ है' सैनिक ने उत्तर दिया।

'तुम कहना क्या चाहते हो'; लेफ्टिनेंट ने पूछा । "तुम्हारा मित्र मर चुका है।" हाँ, श्रीमान! सिपाही ने उत्तर दिया इसका फायदा हुआ, क्योंकि जब मैं उसके पास गया था तब वह जीवित था और मुझे इस बात की संतुष्टि हुई जब उसने कहा, "जिम, मुझे पता था कि तुम जरूर आओगे।"

वसुधैव कुटुम्बकम

पूर्णिमा सूद

संसार के रचयिता की अनेक कृतियां हैं। तरह-तरह के पेड़-पौधे, नदियां, पहाड़ हर चीज उसकी कला का नमूना है। भिन्न प्रकार के जीव-जन्तु अलग-अलग रंग-रूप आकार एवं छवि लिए हुए हैं। मानव उसकी सबसे अनूठी कृति है। रूप-रंग के अंतर के अतिरिक्त सभी मनुष्यों की शारीरिक बनावट लगभग एक जैसी है। अन्य सभी प्रजातियों की तरह संसार को आगे चलाए रखने के लिए नर और मादा दोनों हैं। प्रत्येक जगह की हवा, पानी या जलवायु के अनुरूप वहां रहने वाले लोगों के रंग-रूप एक जैसे हो जाते हैं और आगे की नस्लों में भी वैसा ही चलता रहता है तो क्या हम रूप-रंग के आधार पर उनमें भेद कर सकते हैं? वर्षों से श्वेत-अश्वेत के कारण भेदभाव पर आंदोलन जारी है।

हमारे सभी ग्रंथों, प्राचीन धार्मिक पुस्तकों इत्यादि में यही शिक्षा दी गई है कि हम ईश्वर के सभी प्राणियों से प्रेमभाव रखें, उनकी रक्षा एवं सहायता करें। बहुत से जानवरों या पक्षियों को इंसान द्वारा पाला जाता है, उनकी प्रेम से देखभाल की जाती है। बदले में वे भी इंसान को प्रेम और खुशी प्रदान करते हैं। कुछ जानवर तो इंसान की जीविकोपार्जन के साधन भी बने हैं जैसे बंदर, भालू, घोड़ा, गधा आदि। ऐसे जानवरों को बंद करके रखा जाता है। जहां एक ओर उनको पालन-पोषण तथा सुरक्षा मिलती है, साथ ही उनकी प्राकृतिक स्वतंत्रा छीनकर हुए उन्हें बंदी भी बनाया जाता है जोकि एक चर्चा का विषय हो सकता है।

प्रकृति ने मनुष्य को धूप, हवा, वर्षा के रूप में कई नियामतें प्रदान की हैं, इन पर सबका एक सा हक है। केवल इंसान ने सरहदें बनाकर धरती को टुकड़ों में बांट दिया है। धीरे-धीरे प्रदेशों की भाषाएं, रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास अलग-अलग होते गए और उन्हीं के आधार पर लोग अपने आप को दूसरों से अलग मानने लगे। ऋषि मनु ने सुविधा के लिए कामों का बंटवारा किया था ताकि हर क्षेत्र में कार्य सुचारू रूप से चलता रहे लेकिन उसके आधार पर जातियां बन गईं। व्यक्ति की इन पंथों के अनुसार विचारधारा बनती गई और अपनी मान्यताओं के चलते उनमें मतभेद भी व्याप्त हुए। उसी आधार पर एक दूसरे से नफरत और लड़ाई के बहाने ढूंढ लिए गए। यह सब भेद इंसान के अपने बनाए हुए हैं। हालांकि अभी हाल ही में कोरोना महामारी ने भी इस बात को प्रमाणित कर दिया है कि प्रकृति सबके लिए एक सी है।

अनादिकाल से मुनष्य ने सामाजिक एवं नैतिक आचरण की शिक्षा देने के लिए कई धर्म और संप्रदाय बनाए हैं। इन सबका मूल यही है कि मनुष्य आपस में वैर-विरोध, घृणा, द्वेष की भावना न रखकर प्रेम एवं सहिष्णुता रखें। यही मानवता है, यही सदाचार है। जो धर्म हमें अच्छा मनुष्य बनने के लिए प्रेरित करता है उसी का सहारा लेकर हम भेदभाव एवं नफरत फैलाते हैं। कोई धर्म किसी दूसरे धर्म के प्रति दुर्भावना रखना नहीं सिखाता। सबका उद्देश्य एक ऐसा जीवन जीना सिखाना है जहां सबको समान अधिकार मिलें। मान्यताएं अलग हो सकती है, ईश्वर को देखने या उसकी अराधना करने का ढंग अलग हो सकता है लेकिन लक्ष्य एक ही है।

ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को विशिष्ट गुण एवं हुनर प्रदान किए हैं। कुछ लोग फसल उपजाने में निपुण हैं, कुछ गृह निर्माण में, कुछ वस्त्र, डिजाईनिंग एवं सिलाई में माहिर हैं तो कुछ फर्नीचर इत्यादि बनाने में, कुछ आभूषण बनाने की कला में दक्ष हैं तो कुछ पाककला में अत्यंत पारंगत हैं। समाज में सभी एक दूसरे के लिए कार्य करते हैं और सब जीवन को सरल बनाने में सहयोग देते हैं। अत: स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे पर निर्भर है

और कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं । यह तो हमारी मात्र एक अवधारणा है, उसी के अनुसार हम समाज में व्यक्ति के कार्य के अनुरूप उसे सम्मान देते हैं। परंतु सभी सम्मान के एक समान हकदार हैं। ईश्वर ने जब सृजन करते समय सबको बराबर और एक जैसा बनाया है तो फिर दुनिया में अलग-अलग वर्ग क्यों हैं? हम दूसरों को अपने से हीन कैसे समझ सकते हैं? एक ही पिता की संतान होने के नाते पूरी मानवजाति एक परिवार है। सबको अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए दूसरों को भी उचित सम्मान एवं स्नेह देना चाहिए।

अभिनेता शाहरूख खान की एक फिल्म का मशहूर डायलॉग है - संसार में सिर्फ दो तरह के लोग होते हैं- एक अच्छे और एक बुरे। दूसरा कोई पैमाना नहीं एक को दूसरे से अलग करने का।

पति बहुत सताते हैं

प्रिया शर्मा

जब तक जवान हैं हम,
बूढ़ी भी हमें ही बताते हैं,
बुढ़ापे में संगिनी को बेहद हसीन बताते हैं,
सच में पति बहुत सताते हैं।
बड़े सख्त रहते हैं, जीतते हैं, दबाते हैं,
मगर दिल ही दिल में जिससे जीतते हैं,
उसी से हार जाते हैं,
सच में पति बहुत सताते हैं।
भाई, दोस्त, रिस्तेदार,
यूं तो सबको चाहते हैं,
पर पत्नी के सिवा सबको भूल जाते हैं,
सच में पति बहुत सताते हैं।
उनके ऑफिस में है कोई सुंदर सी,
कहकर हमें जलाते हैं,
लेकिन निगाहों में हम ही होती हैं,
जब वे मुस्कराते हैं,
सच में पति बहुत सताते हैं।
अपनी गलती पर भी अक्सर हमें झुकाते हैं,
लेकिन दिल उनका भी रोता है, जब हमें आंसू आते हैं,
हमारी खुशी पर सारे जहान की दौलत लुटाते हैं
पर हमारे एक आंसू पर वे धड़कन व सांसें थाम जाते हैं,
सच में पति बहुत सताते हैं।
हमारी ख्वाहिशों पर मजबूरी और खर्चे गिनवाते हैं,
लेकिन जब तक ख्वाहिशें न हो पूरी
तब तक चैन कहां पाते हैं,
जितना चाहे नुक्स निकाले मगर,
पार्टी छोड़कर खाना घर में ही खाते हैं,
सच में पति बहुत सताते हैं।
सारा दिन फोन पर लगी रहती हो,
यह कहकर डांट लगाते हैं,
लेकिन हमें खुश रखने के लिए,
लेटस्ट स्मार्टफोन दिलाते हैं,
सच में पति बहुत सताते हैं।
कहते हैं छोड़कर चला जाऊंगा किसी दिन,
लेकिन एक दिन भी,
हमारे बिना नहीं रह पाते हैं,
सच में पति बहुत सताते हैं।
पति जी हम भी तुम्हें ये बता दें कि,
तुम्हारी बातों से कभी-कभी हम भी रूठ जाते हैं,
लेकिन प्रभु का अनमोल तोहफा समझकर,
सारी बातों को हम हवा में उड़ाते हैं
सच में पति बहुत सताते हैं।
जीवन की इस नोक-झोक में,
सात जन्मों की कसमें निभाते हैं,
अपना जीवन तुम्हारे लिए अर्पण कर,
अपना पत्नी धर्म निभाते हैं,
सच में पति बहुत सताते हैं।

महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियां

राकेश रंजन मिश्रा

हमारे देश में मार्च 2020 से कोरोना वायरस महामारी का कहर जारी है। इस महामारी की वजह से लगे लॉकडाउन में सब कुछ थम सा गया है। युवा पीढ़ी पर इसका सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा है। जीवन की रफ्तार धीमी हो गई है। शिक्षण प्रणाली परिवर्तित हुई है। स्कूली शिक्षा की बात हो या तकनीकी शिक्षा या फिर उच्चतर शिक्षा की, सब के सामने चुनौतियां हैं। पिछले 20 महीनों में कई संस्थानों के भविष्य पर ताला लगा है और उन संस्थानों के छात्र पढ़ाई से वंचित हो गए हैं। उच्चतर शिक्षा या तकनीकी शिक्षा के लिए विदेशों में पढ़ने वाले छात्र अपने-अपने घरों तक ही सिमट कर रह गए हैं जिसकी वजह से उनका व्यवहारिक ज्ञान विकसित नहीं हो पा रहा है। दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोग पर्याप्त संसाधनों के अभाव में शिक्षा से दूर हैं। इस प्रकार गुणवत्तापरक शिक्षा से लोग दूर हुए हैं। ऐसे में, तकनीकी के माध्यम से शिक्षा का विकल्प ही बचा है, परन्तु इसकी सार्थकता शत-प्रतिशत संभव नहीं हो सकती।

वर्तमान में, शिक्षा को तकनीकी से जोड़ने के लिए सरकार द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं। एक तरफ टेलीविजन और रेडियो के द्वारा शिक्षा की व्यवस्था की गई है तो दूसरी ओर मोबाइल फोन तथा अन्य इलेक्ट्रानिक गैजेट, ऐप के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था को जारी रखने की पुरजोर कोशिश की जा रही है अर्थात हम धीरे-धीरे तकनीकी आधारित शिक्षा की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। लेकिन यह तकनीकी आधारित शिक्षा अपने आप में बहुत बड़ी चुनौती है। अभी तक तो बच्चों को कुपोषण से बचाने के लिए ही सरकार को मिड-डे-मील जैसी योजना चलानी पड़ रही थी। गरीब परिवारों के पास पर्याप्त भोजन की व्यवस्था ही चुनौती बनी हुई है। देखा गया है कि स्कूलों में प्रत्यक्ष उपस्थिति के दौरान भी अनेक छात्रों के अभिभावकों के पास अध्ययन सामग्रियों की व्यवस्था कर पाने में असमर्थता होती है। इसी प्रकार से वर्तमान शैक्षणिक विकल्प के लिए भी बहुत से लोगों के पास व्यवस्था की कमी है। गांवों में या पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के पास इलेक्ट्रानिक उपकरणों की कमी रहती है, वहां रहने वाले लोग अब भी नेटवर्क की समस्या से जूझ रहे हैं। इसके अलावा भी छात्रों में अनेक प्रकार की समस्याएं होती हैं जैसे कि उनकी

कमजोर श्रवण शक्ति, दृष्टि दोष आदि और कभी-कभी अत्यधिक चंचलता की वजह से छात्र एकाग्रचित होकर शिक्षकों को नहीं सुनते। अध्यापकों के लिए छात्रों को नियंत्रित कर पाना मुश्किल हो जाता है। कभी-कभी ऑनलाइन कक्षा से जुड़े रहकर भी छात्र कक्षा में ध्यान न देकर अन्य गतिविधियों में स्वयं को व्यस्त रखते हैं।

हमें यह कदाचित नहीं भूलना चाहिए कि इस महामारी के दौर ने ही हमसे ऑनलाइन शिक्षा का विकल्प तैयार करवाया है। सामान्य परिस्थिति में, शिक्षक की प्रत्यक्ष उपस्थिति में नन्हें बालकों का भविष्य संवरता है। परंतु महामारी के दौर में बच्चे स्कूल नहीं जा सकते, इसलिए शिक्षण व्यवस्था को चालू रखने और अध्यापक-छात्र के बीच संपर्क बनाए रखने के लिए ऑनलाइन शिक्षा जरूरी है। यह समझा जा सकता है कि ऑनलाइन शिक्षा का विकल्प ऑफलाइन शिक्षा का स्थान नहीं ले सकता। यह सिर्फ एक विकल्प है जो उच्चतर माध्यमिक शिक्षा तक के अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की कोशिश है। स्कूल में छात्र सांस्कृतिक कार्यक्रमों और अन्य विविध गतिविधियों में भी भाग लेते हैं जिससे उनका कला-कौशल विकसित होता है। इन सब के अलावा हमारे देश में अभी भी कई ऐसी जगह हैं जहां निर्बाध रूप से इंटरनेट और बिजली की सुविधा के लिए ठोस कदम उठाए जाने बाकी हैं। कई परिवार ऐसे हैं जिनके पास लैपटॉप, स्मार्ट फोन, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि नहीं हैं। ऑनलाइन शिक्षा के लिए सबसे जरूरी यही चीजें हैं। इसके अतिरिक्त, वर्तमान समय में शिक्षकों को भी ऑनलाइन शिक्षण हेतु बेहतरीन तकनीकी प्रशिक्षण की जरूरत है क्योंकि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पारंपरिक शिक्षण अनुसार बनी है और विषय सूची व शैली भी उसी के अनुरूप है।

महामारी की वजह से उच्च माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा बाधित हो गई है। इसकी वजह से आने वाले 5-10 वर्षों तक छात्रों की प्रतिभा प्रभावित हो सकती है। हालांकि ऊंचे स्तर पर दूरस्थ शिक्षा का प्रसार हुआ है और प्रतिवर्ष के दाखिले इसकी कामयाबी को दर्शाते हैं, लेकिन माध्यमिक स्तर तक की कक्षा शिक्षा से छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। कक्षा शिक्षा के दौरान शिक्षक-छात्र के बीच आपसी संवाद सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। बच्चों में जो एक्सपोज़र विद्यालय जाकर होता है वो ऑनलाइन नहीं मिल सकता। यूं तो चुनौतियां बहुत हैं, पर सत्य यही है कि वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा ने ही शिक्षण व्यवस्था को जारी रखा है। अत: ऑनलाइन शिक्षा के तारतम्य में यह उचित होगा कि शिक्षकों को इन चुनौतियों से सामना करने हेतु तैयार रहने के लिए उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए और तकनीकी आधार पर शिक्षा प्रदान करने की कला को पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ प्रसारित करने की कोशिश की जानी चाहिए।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। बनावटी नहीं होनी चाहिए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

युवा पीढ़ी और रोजगार

शशांक गौरव

पिछले वर्ष से कोरोना ने सभी के जीवन को प्रभावित किया है। इसके चलते न जाने कितनी ही चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा प्रभाव कृषकों, व्यापारियों, दैनिक मजदूरों, युवाओं पर हुआ और उनका जीवन अस्त-व्यस्त हुआ है। आजकल के युवा की सोच व्यक्तिगत रूप से संकेंद्रित होकर मात्र रोजगार प्राप्त करने तक ही रह गई है। दिनभर मोबाइल में लगे रहना और अपनी विफलताओं के लिए किसी अन्य को कोसना उसकी आदत में शुमार हो चुका है। वह सिर्फ किसी एक दिन कोई चमत्कार होने की प्रतीक्षा में बैठा हुआ है। वह पर्यावरण, विज्ञान, तकनीकी, कौशल विकास को छोड़कर व्यर्थ के विषयों जैसे मनोरंजन, राजनीति, खेल जगत आदि में अधिक रुचि लेता है। यू-ट्यूब पर ऐसे विषयों पर व्यूज (देखने वालों की संख्या) देखकर पता लगता है कि अधिकांश लोगों का रुझान किस ओर है। विश्वविद्यालय से पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् उसे सरकारी नौकरी पाने की लालसा रहती है। उसे स्वयं का आकलन करके सोचना चाहिए कि वह उस प्रतिस्पर्धा में सफल होने के लिए कहां तक सक्षम है। उसे अपने देश की सबसे बड़ी समस्या विशाल जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए और उपलब्ध रिक्तियों को देखते हुए आगे की रणनीति बनानी चाहिए। तथ्य की बात करें तो यदि सभी सरकारी नौकरी और सेवानिवृत्त पेंशनभोगियों की कुल संख्या को भी जोड़ दें तो वह हमारी आबादी का 1 प्रतिशत भी नहीं होती। इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि बाकी बची 99 प्रतिशत आबादी कृषि और उससे जुड़े सहायक व्यवसाय, व्यापार या अन्य किसी परोक्ष आय पर निर्भर है। अपनी आर्थिक स्थिति या परिस्थिति के लिए अपने परिवार या अन्य किसी को जिम्मेदार ठहराना गलत है क्योंकि व्यक्ति अपने सार्थक कदम से अपना भाग्य बदल सकता है। युवाओं को अपने आसपास मौजूद क्षेत्रों में संभावनाओं की तलाशते हुए और उपलब्ध संसाधनों के प्रयोग से सफलता प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

युवाओं को सबसे अधिक प्रभावित प्रसिद्ध हस्तियां करती हैं। वे उन्हें अपना रोल मॉडल (आदर्श) मानते हुए उनके जैसा दिखने या उनके जैसी जीवन शैली जीने के लिए उत्सुक रहते हैं परंतु उन शख्सियतों ने उस उपलब्धि तक पहुंचने के लिए कितने संघर्षों का सामना किया है वह उससे अनभिज्ञ रहते हैं। सफलता रातोंरात प्राप्त नही होती, यह तो निरंतर किए गए प्रयासों और अथक परिश्रम का फल है। प्रयास करने का तात्पर्य यह है कि अपने किसी विशिष्ट क्षेत्र में लगन और गंभीरता से उसमें सार्थक प्रयत्न किए जाएं। सर्वप्रथम युवा को समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व समझना चाहिए और वह समाज में किस प्रकार अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकता है उसका विश्लेषण करना चाहिए। तद्नुसार किस प्रकार अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकता है उस पर विचार और अपनी क्षमताओं की परख करते हुए सार्थक प्रयास करना चाहिए।

आजकल तो इंटरनेट की सुविधा इतनी सुलभ है कि इसके माध्यम से अपनी आय को भी बढ़ाया जा सकता है। चाहे वह खुदरा बाज़ार, परिवहन सेवाएं, खान-पान आदि किसी भी क्षेत्र में हो परंतु वह दूरगामी लक्ष्य को छोड़कर मनोरंजन और व्यर्थ के कार्यकलापों में लगा रहता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स या एप्स के माध्यम से सिर्फ समय ही व्यतीत होता है उसका कोई साकारात्मक प्रतिफल प्राप्त नहीं होता। इसके विपरीत

विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में यदि वह कुछ अलग सोचे और कुछ करना चाहे तो वह अपने आसपास दृष्टि डालकर उस स्थान विशेष में संभावनाएं देखते हुए बाज़ार अनुरूप अपना स्वरोजगार अपनाए। उदाहरण के लिए जैसे खेती के बाद पराली जलाना हाल के वर्षों में प्रदूषण के कारण सबसे गंभीर समस्या बन कर उभरी है। अतः यदि कुछ स्थानीय युवा पहल करें तो खेतों में फसल कटने के बाद बची पराली को मजदूरी द्वारा निकालने और उसे एकत्रित कर पशुओं के चारे के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं इससे जलने के कारण मृदा की गुणवत्ता में भी कमी नहीं आएगी और वह उनकी आय का साधन भी बन सकता है। इससे तीन समस्याओं यथा रोजगार, प्रदूषण और मृदा संरक्षण का हल निकलेगा। आजकल इन कृषि अवशेषों का उपयोग रिसाइकेबल खाना परोसने के कंटेनरों और बर्तनों में भी किया जा रहा है। एक ओर जहां इससे पर्यावरण के क्षरण का खतरा कम होगा वहीं दूसरी ओर युवाओं को स्वावलंबी बनने में भी सहायता प्राप्त होगी। युवा परंपरागत लघु उद्योगों पर भी ध्यान दे सकते हैं। एम.एस.एम.ई. या कुटीर उद्योग के माध्यम से अपने आस-पास के क्षेत्र अनुसार बाज़ार में अधिक मांग वाली वस्तुओं के उत्पादन पर संभावनाएं तलाश सकते हैं। वह किसी मरम्मत या रख-रखाव हेतु सेवाएं भी दे सकते हैं।

युवाओं में सबसे बड़ी समस्या निर्भरता की है। वह केंद्र सरकार, राज्य सरकार, बहुराष्ट्रीय कंपनियों आदि से सबसे अधिक आकर्षित और आशान्वित होते हैं। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें किसी सरकारी या ऐसी किसी कंपनी में रोजगार पाने की लालसा होती है जहां उन्हें अधिक से अधिक वेतन मिले। ऐसी मानसिकता अब परंपरा बन चुकी है। सभी भेड़चाल की तरह एक दूसरे की नकल करने में लगे रहते हैं। वह अपनी रुचि और क्षमता भिन्न होने के बावजूद किसी दूसरे को देखकर स्वयं को उस अंधी दौड़ में शामिल कर लेते हैं जिसके लिए वे अनुकूल हैं ही नहीं। युवाओं को निर्भरता स्वयं पर स्थानांतरित करते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। विगत वर्ष लॉकडाउन के कारण न जाने कितने युवाओं को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी। उसमें कुछ युवा इसे नियति मानकर बैठ गए, वहीं कुछ ऐसे जुझारू लोग भी थे जिन्होंने खाली बैठने के बजाए छोटा-मोटा काम करने से भी परहेज नहीं किया। सबसे महत्वपूर्ण बात तो समय का सदुपयोग है। अनुशासन और समयबद्ध तरीके से अपनी दिनचर्या अपनाने वालों को समय की शिकायत नहीं रहती। अतः समय को पूर्ण सम्मान देते हुए कार्य करना चाहिए। यही स्थिति से निपटने की कला है जिससे मुसीबतों में कोई बिखर जाता है तो कोई संवर जाता है।

ऑक्सीजन

मनु अनेजा

ये ऑक्सीजन की हर तरफ कमी छाई है,
अस्पतालों में मरीजों की बाढ़ सी आई है।
पर हमने ये अपने ही कर्मों की तो सजा पाई है।
हमने काटे वृक्ष, लगाई इंडस्ट्रीज, बिल्डिंगें बनाई हैं,
पैसे कमाने के लालच में प्रकृति से खूब छेड़छाड़ मचाई है।

बदले में प्रकृति ने भी हमें लौटाई पाई-पाई है।
प्रकृति के आगे नहीं चलती किसी की, ये बात सिखलाई है,
लगाने चाहिए वृक्ष, ये बात हमें देर से समझ में आई है।

गणतंत्र दिवस

स्वतंत्रता दिवस

भारत में कोरोना की दूसरी लहर

डॉ. लाखा राम

भारत में इस साल की शुरुआत में कोरोना की महामारी कमजोर पड़ती दिख रही थी, लोग राहत की सांस ले रहे थे। रोजाना नए मामलों की संख्या काफी घट गई थी। फिर, भारत में अचानक फरवरी 2021 में आई कोरोना की दूसरी लहर ने तेजी से लोगों को अपना शिकार बनाया। महामारी का दूसरा साल दुनिया के लिए पहले साल के मुकाबले अधिक घातक सिद्ध हुआ है। इस बार देश में विकसित हुए कोरोना वायरस के नए वैरिएंट्स ने इस प्रकार के डरावने हालात पैदा कर दिए कि मुर्दाघरों में लाशों के ढ़ेर, अस्पतालों में बेड की कमी, ऑक्सीजन की सप्लाई बाधित होना, दवाइयों की बड़े पैमाने पर कमी देखने को मिली। ऐसी स्थिति पिछली बार नहीं थी। दुनिया के दूसरे देशों में कोरोना की यह दूसरी लहर लंबे समय तक नहीं टिकी, लेकिन भारत में दूसरी लहर ने सर्वाधिक तबाही मचाई। इस समय भारत विश्व के पांच सबसे ज्यादा कोरोना प्रभावित देशों की सूची में है। ज्यादातर विशेषज्ञों का मानना है कि दूसरी लहर देश में ही विकसित हुए कोरोना वायरस के नए स्ट्रेन्स यानी वैरिएंट की वजह से ज्यादा खतरनाक हो गई है। दूसरी लहर में कोरोना संक्रमित लोगों में से 60 फीसदी लोग 45 साल से कम उम्र के हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक भारत में महामारी की दूसरी लहर के पीछे भी डेल्टा वैरिएंट ही है। दिल्ली, आंध्रप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, ओडिशा और तेलंगाना में विशेष तौर पर इसने भारी तबाही मचाई है।

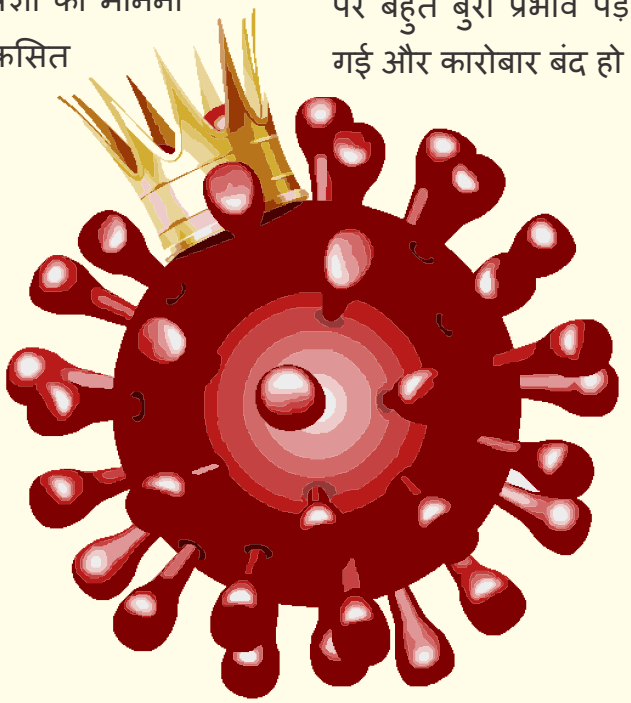

भारत में दूसरी लहर में अचानक आई तेजी की वजह कोरोना के नए वेरिएंट, चुनाव और इस तरह के दूसरे आयोजन हैं। साथ ही लोगों ने बचाव के उपायों जैसे मास्क लगाना, बार-बार हाथ धोना और सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखना कम कर दिया है, साथ ही कई लोगों को लगने लगा है कि वैक्सीन की एक डोज़ लेने के बाद ही वो इम्यून हो गए हैं, अब उन्हें कोरोना नहीं होगा। टीका लगवाने में लोगों की कम दिलचस्पी और टीकाकरण की सुस्त रफ्तार भी प्रमुख रूप से उत्तरदायी हैं।

पिछले साल भारत में कोरोना महामारी की शुरूआत में ही राष्ट्रीय लॉकडाउन की घोषणा कर दी गई थी जोकि महामारी को रोकने का एक कारगर उपाय साबित हुआ, लेकिन मौजूदा आर्थिक हालात में लॉकडाउन लगाना अच्छा विचार नहीं है, पिछले साल जब राज्य और केन्द्र स्तर पर लॉकडाउन लगाया गया था तब अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा था, लोगों की नौकरियां चली गई और कारोबार बंद हो गए, सरकार अब भी पूरी तरह उसकी भरपाई नहीं कर पाई है। अगर इस बार फिर राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन लगाया गया तो अर्थव्यवस्था को संभालना संभव नहीं होता। ऐसे में दूसरी लहर में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोविड-19 के मद्देनजर सभी राज्य सरकारों और केन्द्र शासित प्रदेशों से संक्रमण की चेन तोड़ने के लिए स्थानीय स्तर पर कंटेनमेंट ढ़ांचे की रणनीति पर काम

करने के लिए गाइडलाइंस जारी की है, राज्य सरकारें शुरू में लॉकडाउन लगाने में हिचक रही थी, लेकिन कोविड-19 महामारी के मामलों के बढ़ने से अधिकांश राज्यों में स्थानीय स्तर पर सख्त लॉकडाउन लगा दिया गया, इसके कारण व्यावसायिक गतिविधियां तेजी से घटी, इसका असर विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एम.एस.एम.ई.) पर देखा जा रहा है। राज्यों द्वारा लगाए गए नए प्रतिबंधों के कारण विमानन, ऑटोमोबाइल, पर्यटन, आतिथ्य, रेस्तरां और अन्य क्षेत्रों के व्यवसायों को नुकसान का सामना करना पड़ा हैं। कई प्रवासी मजदूर भी दिल्ली और महाराष्ट्र जैसे शहरी केन्द्रों से 2020 के डरावने दृष्यों के दोहराए जाने की आशंका से घर लौट रहे हैं, इससे निर्माण और बुनियादी ढ़ांचे के विकास जैसी प्रमुख आर्थिक गतिविधियों के प्रभावित होने की संभावना है। यहां इस बात का जिक्र करना जरूरी है कि भारत ही नहीं दुनिया में जहां भी कोरोना की दूसरी लहर आई है, कहीं भी मैन्युफैक्चरिंग बंद नहीं हुई है, कम से कम आम आदमी से जुड़ी चीजें लगातार बनाई जा रही हैं। उनकी खपत में कोई कमी नहीं है। इसलिए अर्थव्यवस्था को पिछले साल जितना नुकसान नहीं होगा।

कोरोना वायरस की दूसरी लहर ने आम जनजीवन को एक बार फिर सीधे रूप से प्रभावित किया है, इसका असर अब जरूरत के सामानों पर भी दिखने लगा है, जैसे- तेल, दाल, दूध से लेकर अन्य सामानों की कीमतों में वृद्धि हुई है जिससे लोगों की रसोई का बजट बिगड़ रहा है। कुछ समय पहले तक 140 रुपये प्रति लीटर मिलने वाला सरसों का तेल अब 200 रुपये के पास पहुंच गया है, पिछले साल से लेकर अब तक खाद्य तेल की कीमतें करीबन 25 प्रतिशत महंगी हुई हैं, दाल की कीमतें लगभग 13 प्रतिशत बढ़ी हैं, बच्चों के डिब्बाबंद दूध की कीमत में 20 रुपये की बढ़ोतरी हो गई है, पेट्रोल-डीजल के भाव लगातार बढ़ रहे हैं। इस बीच देश के विभिन्न हिस्सों में रात्रि कर्फ्यू और आंशिक बंदी लागू होने की वजह से करोड़ों रुपये के व्यापार का नुकसान हुआ है।

कोरोना की भयावह होती दूसरी लहर को नियंत्रित करने के लिए सरकारें मास्क पहनने और सोशल डिस्टेंसिंग के नियमों का पालन करने की लगातार अपील कर रही हैं, इसके लिए सख़्ती भी बरती गई है। कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए आयोजनों, समारोहों, विरोध प्रदर्शन और रैलियों पर रोक लगा दी गई है और ज्यादा मामलों वाले राज्यों से आवाजाही पर सख़्ती बरती गई है। इसके साथ ही वैक्सीनेशन की चरणबद्ध शुरुआत 16 जनवरी 2021 से हुई। पहले स्वास्थ्य कर्मियों को वैक्सीन दी गई, उसके बाद वरिष्ठ नागरिकों और गंभीर बीमारियों वाले 45 साल से ज्यादा उम्र के लोगों के लिए इसे खोला गया, तत्पश्चात् राज्य सरकारों की लगातार बढ़ती मांग व जनआकांक्षाओं को दृष्टिगत रखकर भारत सरकार ने 1 मई 2021 से 18 वर्ष से ऊपर के हर वयस्क के लिए भी वैक्सीनेशन का रास्ता खोल दिया है। वैक्सीन को कोरोना से लड़ाई में एक बड़ा हथियार बताया गया है। लेकिन उसका प्रभाव अभी साफ तौर पर देखने को नहीं मिल रहा है। डॉक्टरों के अनुसार वैक्सीन तभी असर करती है जब उसके दोनों डोज लग जाते हैं। उसके चौदह दिनों बाद इम्यूनिटी बननी शुरू होती है। ऐसे में सवा सौ करोड़ की आबादी में से अभी तक लगभग पच्चीस करोड़ को ही वैक्सीन लगी है। वो लोग और भी कम हैं जिन्हें दूसरी डोज लग चुकी है इसलिए वैक्सीन का प्रभाव दिखने में अभी वक्त लगेगा। केंद्र सरकार को राज्य सरकारों के साथ मिलकर जीवन और आजीविका दोनों को बचाने के लिए युद्ध स्तर पर काम करने की जरूरत है। तभी हम तीसरी लहर के आगमन या उसके प्रभाव को कम करने में सफल हो सकेंगे।

चौधरी चरण सिंह

ललित कुमार

चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसंबर 1902 को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के नूरपुर ग्राम में एक मध्यम वर्गीय कृषक जाट परिवार में हुआ था। इनके पुरखे महाराजा नाहर सिंह ने 1857 की प्रथम क्रांति में विशेष योगदान दिया था। चौधरी चरण सिंह को परिवार में शैक्षणिक वातावरण प्राप्त हुआ था। स्वयं इनका भी शिक्षा के प्रति अतिरिक्त रूझान रहा। चौधरी चरण सिंह के पिता चौधरी मीर सिंह चाहते थे कि उनका पुत्र शिक्षित होकर देश सेवा का कार्य करे। सन् 1923 में चरण सिंह ने विज्ञान विषय में स्नातक किया और दो वर्ष बाद सन् 1925 में उन्होंने कला वर्ग में स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई की और फिर विधि की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सन् 1928 में गाजियाबाद में वकालत आरंभ कर दिया। वकालत के दौरान वे अपनी ईमानदारी, साफगोई और कर्तव्यनिष्ठा के लिए जाने जाते थे। चौधरी चरण सिंह उन्हीं मुकद्दमों को स्वीकार करते थे जिनमें मुवक्किल का पक्ष उन्हें न्यायपूर्ण प्रतीत होता था।

कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन (1929) के बाद उन्होंने गाजियाबाद में कांग्रेस कमेटी का गठन किया और सन् 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 'नमक कानून' तोड़ने पर चरण सिंह को 6 महीने की सजा सुनाई गई। जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने स्वयं को देश के स्वतंत्रता संग्राम में पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। सन् 1937 में मात्र 34 साल की उम्र में वे छपरौली (बागपत) से विधानसभा के लिए चुने गए और कृषकों के अधिकार की रक्षा के लिए विधानसभा में एक बिल पेश किया। यह बिल किसानों द्वारा पैदा की गई फसलों के विपणन से संबंधित था। इसके बाद इस बिल को भारत के तमाम राज्यों ने अपनाया।

31 मार्च 1938 में इन्होंने 'कृषि उत्पाद बाजार विधेयक' पेश किया यह विधेयक किसानों के हित में था, यह विधेयक सर्वप्रथम 1940 में पंजाब द्वारा अपनाया गया। आजादी के बाद चरण सिंह 1952 में उत्तर प्रदेश के राजस्व मंत्री बने एवं किसानों के हित में कार्य करते रहे। इन्होंने 1952 में 'जमींदारी उन्मूलन विधेयक' पारित किया। इस विधेयक के कारण 27000 पटवारियों ने त्याग पत्र दे दिया, जिसे इन्होंने निडरता के साथ स्वीकार किया एवं किसानों को पटवारी के आतंकी वातावरण से आजाद किया और 'लेखपाल' पद का भार संभाला और नए पटवारी नियुक्त किए जिसमें 18 प्रतिशत हरिजनों के लिए आरक्षित किया गया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि वह किसानों के सच्चे हितैषी थे। सन् 1931 में उन्होंने किसानों को इजाफा-लगान व बेदखली के अभिशाप से मुक्ति दिलाने हेतु 'भूमि उपयोग बिल' का मसौदा तैयार करवाया और 1952 में जमींदारी उन्मूलन अधिनियम पास करवाकर एक प्रशंसनीय कार्य किया। उन्होंने किसानों की प्रगति हेतु

जो कार्य किए हैं वे एक अनूठी मिसाल है।

1977 में जनता पार्टी के गठन में मुख्य भूमिका निभाकर लोकसभा के लिए प्रथम बार निर्वाचित हुए और जनता पार्टी सरकार में गृहमंत्री बने। 30 जून 1978 को प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के साथ मतभेद होने के कारण मंत्री मंडल से त्याग पत्र दे दिया।

प्रत्येक वर्ष 23 दिसंबर को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और किसान नेता चौधरी चरण सिंह के जन्मदिन के अवसर पर 'राष्ट्रीय किसान दिवस' मनाया जाता है। चौधरी चरण सिंह का निधन 1987 में हुआ। दिल्ली में यमुना नदी के तट पर उनकी समाधि है 'जिसे किसान' घाट के तौर पर जाना जाता है। उनके निधन के बाद लोकदल का नया अध्यक्ष उनके बेटे अजीत सिंह को बनाया गया।

देश में अनेक सरकारी संस्थान चौधरी चरण सिंह के नाम से हैं। लखनऊ का अमौसी एयरपोर्ट भी चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के रूप में जाना जाता है। मेरठ में भी उनके नाम से चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय है।

चौधरी चरण सिंह ने अत्यंत साधारण जीवन व्यतीत किया और अपने खाली समय में वे पढ़ने और लिखने का काम करते थे। उन्होंने कई किताबें एवं रूचिकर-पुस्तिकाएं लिखी जिसमें 'जमींदारी उन्मूलन', 'भारत की गरीबी और उसका समाधान', 'किसानों की भू-संपत्ति या किसानों के लिए भूमि', 'प्रिवेंशन ऑफ डिवीजन ऑफ होल्डिंग्स बिलो ए सर्टेन मिनिमम', 'को-आपरेटिव फार्मिंग एक्स-रयेद्' आदि प्रमुख हैं।

इंसानियत

मनमीत कौर

सिर्फ अपनी सांसें सबको प्यारी हो गईं,
इंसानियत के मरने की पूरी तैयारी हो गई।
क्या हासिल करोगे जीतकर दूसरों से,
जब अपनों से ही मात करारी हो गई।
ताजी हवा परेशान करती जिस्म को,
सब कुछ जीवन में अब चारदीवारी हो गई।
मौत ही असल हकीकत है जीवन की,
क्यों सबको इतनी जानकारी हो गई।
मां-बाप, भाई-बहन सब मतलब के रिश्ते हैं,
शायद जानवरों सी हमारी नस्ल हो गई।
मजा आता नहीं अब तो किसी भी बात पर,
गुम कहीं वो बच्चों की किलकारी हो गई।
मंदिर-मस्जिद क्या आम क्या खास,
बेदर्द दौलत की दीवानी दुनिया सारी हो गई।
ज्यादा कमाने की अंधी हवस में प्यारो,
खुद की कीमती सासें ही हम पर भारी हो गई।
हर एक सांस को जन्म देने वाली देवी,
इज्जत को मोहताज बेचारी नारी हो गई।

वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है।

पीर मुहम्मद मूनिस

दोस्तियां

भावना सूद

हमने भी कई रूपों में देखी हैं ये
दोस्तियां,
जितनी तरह के लोग, उतनी तरह की
दोस्तियां,
सबसे प्यारी व निराली होती हैं, बचपन
वाली दोस्तियां, वो अठखेलियां करना,
कोहराम मचाना और बड़ों का चिल्लाना,
हमारा छुप-छुप कर हंसना,
और फिर भी मस्ती करते जाना,
पड़ोस के बच्चों व भाई बहनों संग,
निस्वार्थ, चंचल मन वाली दोस्तियां,
हमने भी कई रूपों में देखी हैं ये दोस्तियां।
बहुत गजब की होती हैं, युवावस्था वाली दोस्तियां,
खूब मस्ती करना, हंसी के किस्से दोहराना,
तेज आवाज में हंसना, गाना व बजाना,
दोस्तों संग घूमना-फिरना और खाना-पीना,
मीठी यादों वाली, मस्ती भरी दोस्तियां,
हमने भी कई रूपों में देखी हैं ये दोस्तियां।
एक अजब सी होती हैं आकर्षण वाली दोस्तियां,
दूर से देख मुस्कुराना, आंखों से आंखों का बातें
करना, फिर आगे बढ़ जाना,
दोस्त संग घंटों वक्त बिताना,
अजब-गजब से प्यार वाली दोस्तियां,
हमने भी कई रूपों में देखी हैं ये दोस्तियां।
एक दोस्ती होती है जीवन साथी संग,
सुख भी बांटना दुख भी बांटना,
झगड़ा भी करना, प्यार से गले भी लगाना,
अच्छाई बुराई जान, एक दूसरे को अपनाना,
मेरे जीवन साथी दोस्त बन, जीवन है बिताना,
गाड़ी के दो पहिए बन मंजिल पाने वाली दोस्तियां,
हमने भी कई रूपों में देखी हैं ये दोस्तियां।

कुछ दोस्तियां ऐसी भी जानी हैं जग में,
जो है स्वार्थ छल-कपट से भरी,
दोस्त की खुशी से,
खुशी न महसूस होने वाली,
दोस्त से जुड़े रिश्तों व बातों का उपहास
उड़ाने वाली,
बाहर से मुस्कुराने व मन से छलने वाली,
ए मेरे दोस्त मत कर ऐसी दोस्तियां,
निभा ले अच्छी दोस्तियां,
हमने भी कई रूपों में देखी हैं ये दोस्तियां।
हमने अच्छाई-बुराई समझाने वाली भी देखी है
दोस्तियां,
उदास देख हंसाने व मन को मन से पढ़ लेने वाली
दोस्तियां,
हारने पर भी प्रोत्साहित करने वाली दोस्तियां,
खुश किस्मत बन गए हम ऐसी पाकर दोस्तियां,
हमने भी कई रूपों में देखी हैं ये दोस्तियां,
अच्छी व सच्ची दोस्तियां।

डिजिटलाईजेशन - सकारात्मक या नकारात्मक

मनु अनेजा

कोरोना वायरस जैसी महामारी ने हमारे जीवन के हर पहलू पर प्रभाव डाला है। हालांकि इसके अधिकांश प्रभाव नकारात्मक ही रहे हैं परंतु इसने कुछ सकारात्मक प्रभाव भी डाले हैं। उदाहरणत: इसने हमें अपनी प्राचीन संस्कृति का महत्व जैसे कि हाथ जोड़कर प्रणाम करना, प्रकृति का महत्व, पेड़-पौधों का महत्व, अपने प्राचीन ग्रंथों में दी गई शिक्षाओं का महत्व समझाया है।

इसने हमारे रोजमर्रा के लेन-देन संबंधी पहलू पर भी प्रभाव डाला है। अब हम नकद लेन-देन की बजाय डिजिटल प्लेटफार्म जैसे गूगल पे/फोन पे/पे.टीएम. से लेन-देन करने लगे हैं ताकि एक दूसरे के संपर्क में ना आएं और वायरस से बच सके। कोरोना के कारण स्कूल/कॉलेज भी अब बच्चों/किशोरों को डिजिटल माध्यम से शिक्षा दे रहे हैं।

इसी तरह कोरोना से बंद हुए सिनेमाघरों/मल्टीप्लेक्सों के स्थान पर डिजिटल माध्यम से मनोरंजन परोसा जा रहा है। ओ.टी.टी. प्लेटफार्म (ओवर द टॉप) एक डिजिटल प्लेटफार्म है, जहां हम घर बैठे ही फिल्में/धारावाहिक/न्यूज चैनल/खेल इत्यादि का आनंद ले सकते हैं। परंतु क्या डिजिटलाईजेशन के केवल फायदे हैं? बिल्कुल नहीं। जैसे हर चीज की अति हानिकारक है उसी तरह डिजिटल प्लेटफार्म से अत्यधिक जुड़ाव मानसिक/शारीरिक विकास में बाधा डालता है। बच्चों को पढ़ाई के लिए घंटों ऑनलाइन रहना पड़ता है जिससे उनके मस्तिष्क/आंखों पर गहरा असर पड़ता है। इसी तरह ओ.टी.टी. प्लेटफार्म पर परोसा जा रहा मनोरंजन पश्चिमी सभ्यता से ज्यादा प्रभावित है न कि भारतीय संस्कृति से जिसके आगे चलकर कई दुष्परिणाम हो सकते हैं। अत: हमें इस कोरोना के कारण मिले डिजिटलाईजेशन का लाभ उठाते हुए अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाना चाहिए वरना डिजिटलाईजेशन का यह सकारात्मक पहलू उसके नकारात्मक पहलू से भी ज्यादा खतरनाक असर डालेगा।

हिंदी भाषा

रीना

प्रकृति की पहली ध्वनि ॐ है,
मेरी हिंदी भाषा भी इसी ॐ की देन है,
देवनागरी लिपि है इसकी,
देवों की कलम से उपजी,
बांग्ला, गुजराती, भोजपुरी,
डोगरी, पंजाबी और कई,
हिंदी ही है इन सब की जननी।
प्रकृति की हर एक चीज अपने में संपूर्ण है,
मेरी हिंदी भाषा भी अपने में संपूर्ण है।
जो बोलते हैं वही लिखते हैं,
मन के भाव सही उभरते हैं,
हिंदी भाषा ही तुम्हें प्रकृति के समीप ले जाएगी,
मन की शुद्धि, तन की शुद्धि,
में सहायक यह बन जाएगी
कुछ हवा चली है ऐसी यहां,
कहते हैं इस मातृभाषा को बदल डालो
बदल सकते क्या तुम अपनी माता को,
मातृभाषा का क्यों बदलाव करो
देवों की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो,
बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो
हर एक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो,
हिंद की जड़ों पर आओ हम गर्व करें,
हिंदी भाषा पर आओ हम गर्व करें।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी

कुलदीप सिंह जांगड़ा

आज के समय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो इंटरनेट का इस्तेमाल न करता हो। हमारे भारत देश में पहले के मुकाबले अब गांव में रहने वाले लोग भी इंटरनेट का इस्तेमाल करने लगे हैं। हमारे देश की सरकार ने भी भारत को 'डिजिटल इंडिया' का नाम दिया है और सरकारी दफ्तरों में भी सभी प्रकार के कार्य अब डिजिटल रूप में यानि कि इंटरनेट की सहायता से किए जा रहे हैं। वर्तमान समय में हम 4G तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और अब आगे हम धीरे-धीरे 5G तकनीक की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

5G में 'G' का अर्थ क्या है?

अब तक 1G से लेकर 5G टेक्नोलॉजी आ चुकी है। कई लोग सोचते हैं कि आखिर 'G' का क्या तात्पर्य होता है वास्तव में 1G से लेकर 5G तक 'G' का तात्पर्य जनरेशन से होता है। जनरेशन यानि की पीढ़ी। हम जिस भी पीढ़ी की टेक्नोलॉजी इस्तेमाल कर रहे होते हैं उसके आगे 'G' लग जाता है और यही 'G' आधुनिक तकनीक के उपकरण को नई पीढ़ी के रूप में दर्शाने का कार्य करता है। हमारा देश धीरे-धीरे नई तकनीक की ओर अग्रसर होता जा रहा है और हमारे देश में भी नई-नई तकनीकों का निर्माण किया जा रहा है।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी क्या है?

5G टेक्नोलॉजी दूरसंचार की टेक्नोलॉजी से संबंध रखती है। किसी भी तकनीक का इस्तेमाल वायरलेस तकनीक के जरिए किया जाता है। दूरसंचार की इस नई तकनीक में रेडियो तरंगें और विभिन्न तरह की रेडियो आवृति का इस्तेमाल किया जाता है। अब तक जितने भी टेक्नोलॉजी दूरसंचार के क्षेत्र में आ चुके हैं, उनके मुकाबले में यह तकनीक काफी नई और तीव्रता से कार्य करने वाली तकनीक है। इस नवीन तकनीक का अंतिम मानव का निर्धारण आई.टी.यू. यानि कि इंटरनेशनल टेलीकम्युनिकेशन यूनियन के हाथों किया जाता है। 5G की तकनीक 4G तकनीक के मुकाबले नए जनरेशन की तकनीक है और यह अब तक आ चुकी सभी तकनीक से सबसे ज्यादा आधुनिक तकनीक मानी जा रही है।

नाम	5G नेटवर्क
लांच	सन 2020
भारत में लांच	सन् 2021 (दूसरी छः माही से)
स्पीड	20 GB प्रति सेकंड
इंटरनेट स्पीड	1GB फाइल डाउनलोड प्रति सेकंड
बैंडविड्थ	3500 मेगाहर्ट्ज

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी भारत में लांच

छठवें स्थान पर दुनिया के सबसे अमीर आदमी मुकेश अंबानी ने 5G तकनीक पर अपडेट देते हुए कहा है कि इसे हमारे भारत देश में 2021 के दूसरी छः माही में ग्राहकों की सेवा के लिए 5G नेटवर्क को लांच कर दिया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि हमारे देश में इससे जुड़े हुए सभी प्रकार के नवीन बदलाव एवं इससे जुड़ी हुई प्रक्रियाओं को एक बूस्ट प्रदान करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यह तकनीक सभी वर्गों के हाथों तक पहुंचे इसके लिए इसे आसान, सुलभ एवं सस्ता करने की आवश्यकता होगी। इसलिए इसे जल्द से जल्द लॉन्च किया जाएगा।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी फायदे

- इस नई तकनीक की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी सहायता से ऑटोमोबाइल के जगत में औद्योगिक उपकरण एवं संसाधन यूटिलिटी मशीन संचार एवं आंतरिक सुरक्षा भी पहले के मुकाबले और विकसित

एवं बेहतर होने के साथ-साथ इनके बीच में संबद्धता की वृद्धि होगी।

- 5G तकनीक सुपर हाई स्पीड इंटरनेट की कनेक्टिविटी प्रदान करने के साथ-साथ यह कई महत्वपूर्ण स्थानों में उपयोग में लाया जाएगा। इस टेक्नोलॉजी के आ जाने से कनेक्टिविटी में और भी ज्यादा विकास एवं शुद्धता प्राप्त होगी।
- 5G की तकनीक की वजह से ड्राइवरलेस कार, हेल्थ केयर, वर्चुअल रियलिटी, क्लाउड गेमिंग के क्षेत्र में नए-नए विकासशील रास्ते खुलते चले जाएंगे।
- क्वालकॉम के अनुसार अभी तक 5G की तकनीक ने करीब 13.1 ट्रिलियन डॉलर ग्लोबल इकोनामी को आउटपुट प्रदान कर दिया है। इसकी वजह से दुनिया भर में करीब 22.8 मिलियन के नए जॉब अवसर विकसित हो रहे हैं।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी विशेषताएं

5G नेटवर्क स्पीड

इस नई तकनीक की स्पीड करीब एक सेकंड में 20GB के आधार पर इसके उपभोक्ताओं को प्राप्त होगी। इस तकनीक के आ जाने से टेक्नोलॉजी से जुड़े हुए सभी कार्यों में तेजी से विकास होगा और सभी कार्य आसानी से काफी तीव्र गति में किए जा सकेंगे।

इंटरनेट स्पीड में वृद्धि

अभी हम वर्तमान समय में 4G तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और इस तकनीक का इस्तेमाल करके हम 1 सेकंड में करीब 1GB की फाइल को डाउनलोड करने की क्षमता रखते हैं वहीं 5G की तकनीक में हमें 1 सेकंड के अंदर करीब 10GB या इससे ऊपर की डाउनलोडिंग क्षमता वाली गति प्राप्त होगी।

डिजिटल इंडिया क्षेत्र में विकास

5G नेटवर्क के आ जाने से देश में डिजिटल इंडिया को एक अच्छी गति प्राप्त होगी और साथ ही देश के विकास

में भी तीव्रता आएगी।

जी.डी.पी. बढ़ोतरी में तेजी

हाल ही में आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन ने दावा करते हुए कहा है कि देश में 5G की तकनीक के आ जाने से हमारे देश की जी.डी.पी. एवं अर्थव्यवस्था में काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल सकता है।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी नुकसान

- तकनीक शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों के अनुसार एक शोध में पाया गया कि 5G तकनीक की तरंगें दीवारों को भेदने में पूरी तरीके से असक्षम होती है। इसी के कारणवश इसका घनत्व बहुत दूर तक नहीं जा सकता है और इसी के परिणामस्वरूप इसके नेटवर्क में कमजोरी पाई गई।
- दीवारों को भेदने के अलावा इसकी तकनीक बारिश, पेड़-पौधों जैसे प्राकृतिक संसाधनों को भी भेदने में पूरी तरीके से असक्षम सिद्ध हुई है। 5G तकनीक को लॉन्च करने के बाद हमें इसके नेटवर्क में काफी समस्या देखने को मिल सकती है।
- कई लोगों का मानना है कि 5G तकनीक में जिन किरणों का उपयोग किया जा रहा है उनका परिणाम घातक सिद्ध हो रहा है और उसी का घातक परिणाम कोरोना वायरस है परंतु अभी तक इस विषय में कोई साक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकी है।

5G नेटवर्क स्पेक्ट्रम बैंड

5G की नई तकनीक में millimeter-wave स्पेक्ट्रम अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसका सर्वप्रथम विचार वर्ष 1895 में सबसे पहले जगदीश चंद्र बोस ने प्रस्तुत किया था और उन्होंने बताया था कि इन वेब का इस्तेमाल करके हम कम्युनिकेशन को बेहतर बना सकते हैं। इस प्रकार की तरंगें करीब 30 से लेकर 300 गीगाहर्ट्ज फ्रीक्वेंसी पर काम कर सकती हैं। ऐसी तरंगों का इस्तेमाल हम सैटेलाइट और रडार सिस्टम के अंदर भी इस्तेमाल करते हैं। 5G नेटवर्क की नई तकनीक करीब 3400 मेगाहर्ट्ज, 3500 मेगाहर्ट्ज और यहां तक कि 3600 मेगाहर्ट्ज बैंड्स पर काम कर सकती है। इस नई नेटवर्क तकनीक के लिए 3500 मेगाहर्ट्ज बैंड इसके लिए एक आदर्श बैंड कह सकते हैं क्योंकि यह सबसे मध्य का बैंड है और इसके साथ ही यह काफी कनेक्टिविटी भी प्रदान करता है।

5G नेटवर्क का कोरोना कनेक्शन

हाल ही में कई बड़े-बड़े सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लोगों ने कहा है कि 5G तकनीक के टेस्टिंग के वजह से ही कोरोना वायरस का संक्रमण तेजी से फैल रहा है और कोरोना वायरस के उत्पत्ति का भी कारण 5G तकनीक है। इस प्रकार की खबरें हर एक सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर 5G की तकनीक को लेकर फैल रही है। क्या सच में 5G के कारण मौत हो रही हैं? आइये जानते हैं क्या है इसके पीछे के तथ्य -

5G तकनीक से जुड़ी हुई ये खबरें एक भ्रांतियां मात्र हैं। इन भ्रांतियों के बारे में स्पष्टता से वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गेनाइजेशन ने एक अधिकारिक जानकारी लोगों के साथ साझा की है। उन्होंने कहा है कि कोरोना वायरस का संक्रमण मोबाइल फोन नेटवर्क या फिर किसी अन्य रेडियो तरंगों के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जा सकता है। साथ ही डब्ल्यू.एच.ओ. ने यह भी कहा है कि कोरोना वायरस का संक्रमण उन देशों में भी है जहां पर अभी 5G की नेटवर्क टेस्टिंग तक नहीं की गई है और ना ही वहां पर अभी तक 5G का मोबाइल नेटवर्क स्थापित किया गया है। फिर भी वायरस वहां पर फैल रहा है इसलिए 5G का कोरोना से कोई संबंध नहीं है।

जब 5G की नई तकनीक पूरी तरीके से कार्य करने लगेगी तब संपूर्ण विश्व में एक अलग ही विकास की लहर दौड़ना प्रारंभ कर देगी। इस तकनीक के भारत में आ जाने से हमारे देश का विकास और भी तीव्रता से होगा और नए-नए रोजगार के अवसर लोगों को प्राप्त होंगे।

अहिंसा

अंकित खोखर

संसार का ध्यान गांधी जी की ओर इसलिए आकृष्ट हुआ कि उन्होंने बाहुबल के समक्ष आत्म बल का शस्त्र निकाला, तोपों का सामना करने के लिए अहिंसा का आश्रय लिया। किंतु सोचने की बात यह है कि अहिंसा का आश्रय उन्होंने क्यों लिया? क्या इसलिए कि अंग्रेजों के विरूद्ध हिंसा का आश्रय लेकर वे भारत को स्वाधीन नहीं कर सकते थे? अथवा इसलिए कि मानव समाज को वो यह शिक्षा देना चाहते थे कि मनुष्य जब तक बाहुबल का प्रयोग करता है, तब तक वह पूर्ण मनुष्य नहीं बन सकता। अहिंसा मनुष्य के चरित्र का आधार है। उसके रूप को निर्मल बनाने का उपाय ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है।

घृणा, क्रोध एवं आवेग की प्रवृत्ति मनुष्य में समय-समय पर समाविष्ट होती रहती हैं। परंतु वास्तविक रूप से मनुष्य वही है जिसने इन अवगुणों पर विजय प्राप्त कर ली हो। वैसे इन सभी दुर्भावनाओं से पार पाना भी इतना सरल नहीं है। हिंसक प्रवृत्ति पशुओं में भी कभी-कभी ही देखने को मिलती है जो आनुवांशिक है किंतु पशु भी हिंसा वहीं अपनाता है जहां उसे आवश्यकता होती है। अत: मनुष्य को संपूर्ण जीव जगत में स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाते हुए जितना संभव हो दया एवं परोपकार के सद्मार्ग पर चलना चाहिए।

जिंदगी सिखाती है

गौतम कुमार

अजीब दास्तान है इस जिंदगी की,
ना जाने कितने मौकों पर तकदीर बेवजह रूलाती है,
जिसकी कभी कल्पना भी ना की हो जीवन में,
ऐसे अनोखे मंजर दिखाती है।
जो कल तक हंसती थीं जोर-जोर से सांसें,
वही आज सामने देखकर दुखों से कराहती हैं,
जिसने कभी भी गलत ना किया किसी के साथ,
उसके आंगन में भी आफतों की बारिश आती है।
जिंदगी अजीब चीज है,
करके परेशान किसी को बेवजह,
फिर दूर खड़ी मुस्कराती है,
लूट कर किसी बेकसूर का सब कुछ,
कभी भी न अपने कामों पर पछताती है।

सोचता रहता इंसान मजबूर होकर,
क्या जिंदगी सबके साथ यूं ही निभाती है,
देकर सबको थोड़ा या ज्यादा कष्ट,
जिंदगी का असली मतलब समझाती है।
रोना पड़ता है हंसते-खेलते इंसानों को भी,
जब जिंदगी गमों की दुनिया से पर्दा उठाती है,
दुख-सुख मिलकर ही करते एक अदद जीवन का निर्माण,
शायद ये समझकर हर माहौल में जीना सिखाती है।
जो सह जाता हर गम को हंसकर,
उसके जीवन में फिर से बहार आती है,
छू भी ना पाए कोई गम उसके दामन को,
फिर तो जिंदगी इंसान को इतना ऊपर उठाती है।

पढ़ाई और परवरिश

कमल अरोड़ा

पढ़ाई और परवरिश का आपस में गहन सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। प्रत्येक माता-पिता यह चाहते हैं कि उनका बच्चा अच्छी से अच्छी शिक्षा ग्रहण करे तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करे। डॉक्टर, इंजीनियर, वकील या अच्छा प्रशासनिक अधिकारी बने जिससे माता-पिता, देश, समाज का नाम रौशन करे!

तेजी से बदलते युग में माता-पिता बच्चों को सभी भौतिक सुख-सुविधाएँ प्रदान करना चाहते हैं, परन्तु कितने माता-पिता है जो बच्चे के मानसिक विकास की ओर सजग रहते हैं। बच्चों में पढाई के साथ-साथ उनमें आन्तरिक मूल्यों का विकास होना जरुरी है। मुख्यत: बच्चा तीन जगह से शिक्षा ग्रहण करता है - घर, स्कूल, दोस्तों या बाहरी परिवेश से। इनमें से एक में भी कमी

होने पर सम्पूर्ण विकास नहीं हो सकता। घर के वातावरण से बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं। बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करना, उनकी देखभाल करना आदि। हम सभी यह चाहते हैं कि हमारा बच्चा हमारा सम्मान करे, सेवा करे, देखभाल करे। लेकिन क्या कभी हमने उनके समक्ष कोई ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है। भीतरी गुण विकसित करना कोई पिज्जा डिलीवरी जैसा नहीं होता, जो ऑर्डर करने पर तुरन्त परिणाम दर्शाता है।

प्रत्येक माता-पिता बच्चे में अच्छे गुण एवं संस्कार देने की कोशिश करते हैं और बच्चा अपने माता-पिता, अध्यापक, अपने मित्रों और बाहरी परिवेश से ही ये गुण बिना पुस्तकीय ज्ञान के प्राप्त करते हैं। किताबी शिक्षा के साथ-साथ यह आन्तरिक गुण विकसित करना एक पेड़ को अच्छी परवरिश का खाद-पानी देकर बड़ा करने के समान है, जिसकी छाया और फल का सुख कई वर्षों की तपस्या के बाद माता-पिता को प्राप्त होता है।

बच्चे में ईमानदारी, धैर्य, बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करना, आवश्यकता होने पर सहायता की ओर कदम बढ़ाना, आदि गुण विकसित करने हेतु माता-पिता को प्रथमत: यह गुण स्वयं अपनाने होगें, उनके लिए उदाहरण बनना होगा ताकि बच्चे जो भी कार्यक्षेत्र चुने, उसमें बाहरी शिक्षा के साथ-साथ भीतरी शिक्षा का भी उचित उपयोग हो, जिससे वे किसी भी मामले में निष्पक्ष व उत्तम गुणों के साथ-साथ निर्णय लेने में सक्षम हो।

अत: उत्तम परवरिश का होना उत्तम पढ़ाई से नहीं, अपितु उत्तम परवरिश से उत्तम पढ़ाई का होना सार्थक हो सकता है।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

मन की अमावस को मिटाकर आत्ममंथन का दीया जलाएं

मुनीष भाटिया

आज समाज में चहुँ ओर हिंसा, अराजकता व झूठ का बोलबाला है। समाज की प्रत्येक इकाई से गिर रहे नैतिकता के स्तर और आस-पास की विकृतियों के प्रति आंख मूंद लेना और समाज की किसी इकाई विशेष को दोषारोपित करना हमारी आदत सी बन गई है। आज यह मानवीय प्रवृत्ति हो चुकी है हम अपने घर की गंदगी की सफाई करना तो अपना कर्तव्य समझते हैं किन्तु अपने आस-पास की गंदगी के लिए शासन से उम्मीद लगाए रखते हैं और समाज में हो रहे अपराधों और समाज व राष्ट्र के प्रति जवाबदेही के प्रति मूकदर्शक बने रहने को अपने जीवन व्यवहार में शामिल कर लिया है।

आज यह मानवीय प्रवृत्ति हो चुकी है कि हम दूसरे के दोषों की चर्चा तो खूब करते हैं किंतु अपनी गलतियों पर पर्दा डाल लेते हैं। दूसरों के दोष तो हमें नजर आ जाते हैं किन्तु स्वयं के बड़े से बड़ा अपराध का भी हम आत्मनिरीक्षण करने की कोशिश तक नहीं करते। आज के गिरते मानवीय जीवन चरित्र को देखते हुए, दूसरों के प्रति अपने दुर्व्यवहार व अपने दोषों अनुसार सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में कबीर द्वारा कही गई वाणी 'दोस पराए देखि करि चला हंसत-हंसत', 'अपने याद न आवई जाको आदि न अंत' अर्थात् यह मनुष्य का स्वभाव है कि जब वह दूसरों के दोष देखकर हंसता है, तब उसे अपने दोष याद नहीं आते जिनका न आदि है न अंत। यह एक विडंबना ही कही जाएगी कि आत्म निरीक्षण व आत्म विश्लेषण कर अपनी गलतियों को सुधारने की बजाए हम अपने विवेक दर्पण में वही सब कुछ देखना चाहते हैं जैसा हमारा मन करता है। कबूतर की तरह आँख मूंदे रहने की भावना ने समाज को किंकर्तव्यविमूढ़ बना दिया है।

निज की स्वस्थ आलोचना कर व अपने गुण दोषों को हम देखना भी नहीं चाहते। यही कारण है कि सामाजिक अपराधों में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। समाज की प्रथम इकाई अर्थात परिवारों में जहां घरेलू अपराध होते हैं व महिलाओं का शोषण होता है वहीं दहेज, यौन उत्पीड़न की घटनाएं यह सोचने को विवश करती हैं कि आखिर नियति हमारे समाज को किस दिशा की ओर ले जाना चाहती है। स्वतंत्रता का सूरज देशवासियों के लिए उम्मीद की नई किरण लेकर तो आया किंतु स्वार्थ लोलुपता के अहंकार ने आम भारतीय को ऐसे चक्रव्यूह में फंसा दिया कि उस नागपाश में से निकलने के चक्कर में यह उलझता ही गया और अंततः अपराध की यह मानसिक ग्रंथि कोढ़ की भांति पूरे समाज में फैल गई। आत्म निरीक्षण का अभाव और प्रतिशोध की भावना के घर करने के कारण ही भारतीय समाज में अपराधों में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है।

गांधी के इस देश में हिंसा, बलात्कार व अपहरण आम बात हो गई है। अतः जहां एक ओर आवश्यकता है कानून को समान रूप से लागू करने की, साथ ही जरूरी है कि आत्मनिरीक्षण की भावना जागृत की जाए। इसके लिए समाज की प्रथम इकाई से शुरुआत करनी होगी। गांधी जी ने अपने आख्यानों में बार-बार दोहराया है - अपने को देखो अर्थात् अपना मानस मंथन कर निज के गुण, दोषों की परख करो। उन्होंने आत्मविश्लेषण को ऐसा अचूक अस्त्र बताया है जिससे न केवल दोषों का निवारण होता है बल्कि इससे सत्य स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त होता है। जिससे मन न तो बुराइयों की ओर आकर्षित होता है और न ही किसी का बुरा करने के बारे में सोचता है। यदि इस तरह आत्म

नियंत्रण की भावना, प्रत्येक व्यक्ति में आ जाए तो निश्चित ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के पावन उद्देश्य की प्राप्ति संभव है।

अतः जरूरी है कि परिवार में इस तरह का माहौल बनाया जाये जिससे सदस्यगणों में आत्मनिरीक्षण करने की आदत का भाव उत्पन्न हो। अपने हृदय को अपनी क्रियाओं का दर्पण मानते हुए गुण दोषों का विवेचन करने का अभ्यास करें तथा एक क्षण के लिए यह मनन करें कि किसी से किया गया हमारा व्यवहार, दूसरे को मानसिक ठेस तो नहीं पहुंचा रहा। यदि जानबूझकर या प्रतिशोध की भावना से किसी को हानि पहुंचाई जाती है तो शांत मन से अपने उस व्यवहार का विश्लेषण करना चाहिए। यदि अपने व्यवहार में कहीं भी पश्चाताप महसूस हो तो निश्चित रूप से आत्म निरीक्षण द्वारा हम अपने दोषों का निवारण कर सकेंगे। ऐसी भावना के साथ उद्देश्य पूर्ति का यही सन्मार्ग होगा और कर्तव्य पालन करते हुए सच्ची सफलता का दीया मन में रोशन कर सकेंगे जिससे निज संतुष्टि तो मिलेगी ही साथ ही इसमें समाज कल्याण भी निहित होगा, उसी सूरत में मन में छिपी अमावस का सही अर्थों में अंत माना जाएगा।

दोस्त अब थकने लगे हैं

संकलित

किसी का पेट निकल आया है,
किसी के बाल पकने लगे हैं,
सब पर भारी जिम्मेदारी है,
सबको छोटी-मोटी बीमारी है,
दिन भर जो भागते-दौड़ते थे,
वो अब चलते-चलते भी रूकने लगे हैं,
दोस्त अब थकने लगे हैं।
किसी को लोन की फिक्र है, कहीं हैल्थ टेस्ट का जिक्र है,
फुर्सत की सभी को कमी है, आंखों में अजीब सी नमी है,
कल तक जो प्यार के खत लिखते थे,
आज बीमे के फार्म भरने लगे हैं,
दोस्त अब थकने लगे हैं।
किसी पर बच्चों की जिम्मेदारी है,
तो कहीं पर मां-बाप की बीमारी है,
अपने लिए तो समय ही नहीं है,
अब तो बचपन के ऐशो-आराम को तकने लगे हैं,
दोस्त अब थकने लगे हैं।
याद बचपन का वो पल आता है,
हर लम्हा बीता तो सुनहरा कल आता है,
उस राह को छोड़कर जिम्मेदारी में अब फंसने लगे हैं,
दोस्त अब थकने लगे हैं।
अब मिलना भी कभी-कभी होता है,
दोस्त का मिलना तो शादी-ब्याह में नसीब होता है,
जीवन के हर कदम पर जिम्मेदारियों के बोझ में ढलने लगे हैं,
यकीन मानिए साहब, दोस्त अब थकने लगे हैं।

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।

रविशंकर शुक्ल

वर्तमान समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता

मनीष देव

वर्तमान अस्थिरता के दौर में जहां एक ओर कोविड-19 जैसी महामारी ने लोगों को हताश और बेहाल कर दिया है वहीं दूसरी ओर इसके आर्थिक परिणाम भी लोगों को भविष्य के प्रति आशंकित किए हुए हैं। कभी-कभी कुछ घटनाएं लोगों को मानवीय मूल्यों पर चिंतन करने को विवश कर देती हैं तो कभी ड्रग्स या मानव तस्करी जैसे मामले समाज को झकझोरते हैं। आज संपूर्ण विश्व बाजारवाद के दौड़ में शामिल हो चुका है। लालच की लालसा सारी सीमाएं पार कर जाती हैं ऐसे में गांधीवाद की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक हो जाती है। वर्तमान परिदृश्य में द्वेष और घृणा को दूर करने के लिए गांधीवाद को अपनाने की जरूरत है।

गांधीवाद है क्या? किसी भी शोषण का अहिंसक प्रतिरोध, सबसे पहले दूसरों की सेवा, संचय से पहले त्याग, झूठ के स्थान पर सच, अपने बजाय देश और समाज की चिंता करना आदि विचारों को समग्र रूप से गांधीवाद की संज्ञा दी जाती है। गांधीवादी विचार व्यापक रूप से प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रेरणा पाते हैं और इन विचारों की प्रासंगिकता अभी भी बरकरार है। आज के दौर में समाज में कल्याणकारी आदर्शों का स्थान असत्य, अवसरवाद, लालच व स्वार्थपरता जैसे संकीर्ण विचारों द्वारा लिया जा रहा है। विश्व शक्तियां शस्त्र एकत्र करने की स्पर्धा में लगी हुई है लेकिन एक छोटे से वायरस को हरा पाने में असमर्थ और लाचार साबित हो रही है। ऐसे में विश्व शांति की पुनर्स्थापना के लिए मानवीय मूल्यों को पुन: प्रतिष्ठित करने के लिए आज गांधीवाद नए स्वरूप में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है।

गांधी जी धर्म और नैतिकता में अटूट विश्वास रखते थे। उनके लिए धर्म प्रथाओं और आडंबरों में बंधा हुआ नहीं था वरन् आचरण एवं नैतिकता की एक छवि थी। गांधी जी साधना एवं साध्य दोनों की शुद्धता पर बल देते थे। गांधी जी सत्य को ईश्वर का पर्याय मानते थे और उनका मत था कि सत्य सदैव विजयी होता है। अगर मनुष्य का संघर्ष सत्य के लिए है तो हिंसा का उपयोग किए बिना वह अपनी सफलता को सुनिश्चित कर सकता है।

प्रमुख गांधीवादी विचारधारा और वर्तमान सत्य: गांधी जी सत्य को ईश्वर मानते थे। उनके लिए सत्य सर्वोपरि सिद्धांत था। वे वचन और चिंतन में सत्य की स्थापना का प्रयत्न करते थे। लेकिन वर्तमान समय में देखा जाए तो राजनीतिज्ञ एवं मंत्रीगण अपने पद की शपथ ईश्वर को साक्षी मानकर लेने के बावजूद गलत काम करने से पीछे नहीं हटते। अगर गांधीवादी विचारधाराओं का सही से पालन किया जाए तो देश नवनिर्माण की दिशा में आगे बढ़ चलेगा।

अहिंसा: गांधी जी के अनुसार मन, वचन और कर्म से दु:ख नहीं पहुंचाना ही अहिंसा है। गांधी जी के विचारों का मूल लक्ष्य सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से विरोधियों का हृदय परिवर्तन करना है। गांधी जी व्यक्तिगत जीवन से लेकर वैश्विक स्तर पर मनसा वाचा कर्मणा के सिद्धांत का पालन करने पर बल देते थे।

यदि उपरोक्त सिद्धांत का पालन किया जाए तो आज हीन, राजनीतिक व आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्याकुल समाज व विश्व अपनी कई महत्वपूर्ण समस्याओं का निदान खोज सकता है। आज संपूर्ण विश्व अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए हिंसा का माध्यम ढूंढना चाहती है। वैश्विकरण के इस दौर में वसुधैव कुटम्बकम् की अवधारणा ही खत्म होती जा रही है। अमेरिका, चीन, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया जैसे देश हिंसा के माध्यम से वर्चस्व और प्रमुख शक्ति बनने की होड़ में लगे हुए हैं।

सत्याग्रह: सत्याग्रह का तात्पर्य है सभी प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ आत्मबल का प्रयोग करना। गांधी जी का मत था कि निष्क्रिय प्रतिरोध

कठोर से कठोर हृदय को भी पिघला सकता है। उनके अनुसार शारीरिक प्रतिरोध करने वाले की अपेक्षा निष्क्रिय प्रतिरोध करने वाले में कहीं ज्यादा साहस और इच्छाशक्ति की जरूरत है। आज के समय में सत्याग्रह का प्रयोग विभिन्न स्थानों एवं परिस्थितियों पर सुसंगत एवं तार्किक प्रतीत होता है। राष्ट्रीय या अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर सरकारी नीतियों, आदेशों से मतभेद की स्थिति में विरोध हेतु सत्याग्रह का प्रयोग कहीं श्रेयस्कर है। आत्मबल, शारीरिक बल से कहीं अधिक श्रेष्ठ होता है। बुराई के प्रतिकार के लिए यदि आत्मबल का सहारा लिया जाए तो मौजूदा परेशानियां दूर की जा सकती हैं।

सर्वोदय: सर्वोदय शब्द का अर्थ है सार्वभौमिक उत्थान या सभी की प्रगति। सर्वोदय ऐसे वर्गविहिन, जातिविहिन और शोषण मुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास का साधन और अवसर मिले। ऐसे समाज में वर्ण, धर्म मुक्त समाज की स्थापना की परिकल्पना है। ऐसे समाज में वर्ण, धर्म, जाति, भाषा के आधार पर किसी समुदाय का बहिष्कार नहीं है। वर्तमान में शोषण एवं वर्ग, जाति आदि के नाम पर हिंसा हो रही है तो कहीं आतंक फैलाया जा रहा है। एक वर्ग दूसरे का शोषण कर रहा है जिससे समाज में अव्यवस्था फैल रही है। अगर गांधी जी के सर्वोदय की संकल्पना साकार होती है तो संपूर्ण विश्व एक परिवार का रूप ले सकता है।

गांधी जी शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन व जीविका कमाने का कार्य एक साथ करने पर बल देते थे। आज जब बेरोजगारी देश की इतनी बड़ी समस्या है तब गांधी जी के इस विचार को ध्यान में रखकर शिक्षा नीतियां बनाना लाभप्रद है। गांधी जी का राष्ट्र का विचार भी अत्यंत प्रगतिशील था। उनका राष्ट्रवाद, 'वसुधैव कुटुम्बकम' के विस्तार से प्रेरित था। वे राष्ट्रवाद की अंतिम परिणति केवल एक राष्ट्र के हितों तक सीमित न मानते हुए विश्व कल्याण की दिशा में विस्तृत करने पर बल देते थे। आजकल राष्ट्रवाद का अतिवादी स्वरूप होता देखकर गांधीवादी राष्ट्रवाद सटीक लगता है।

हमें ज्ञात है कि गांधी जी के विचार शाश्वत हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि उन्होंने जमीनी तौर पर अपने विचारों का परीक्षण किया और जीवन में सफलता अर्जित की जो न सिर्फ स्वयं के लिए अपतु पूरे विश्व के लिए थी। आज दुनिया गांधी के मार्ग को सबसे स्थाई रूप में देखती है।

गमों में भी मुस्कुराना सीखिए

वीरेंद्र कुमार

परवाह नहीं, चाहे कहता रहे कोई हमें पागल दीवाना,
हम क्यूं बताएं किसी को,
हम जानते हैं गमों में भी मुस्कुराना।
जान तक अपनी लुटानी पड़ती है इश्क में,
ऐसे ही नहीं लिखा जाता मोहब्बत का अफसाना।
किसी लाश के पास खड़ी होती है सांस लेती लाशें,
मुर्दा कौन है, समझ जाओ तो मुझे भी समझाना।
टाल-मटोल चल जाती है अपने जरूरी कामों में,
पर मौत नहीं सुनती किसी का कोई भी बहाना।
नूर ना बन जाए एक-एक बूंद अश्क की तो कहना,
कभी मां-बाप की खातिर चंद आंसू तो बहाना।
जब किस्मत साथ नहीं देती आदमी का,
तो मुश्किल हो जाता है
दो वक्त की रोटी भी कमाना।
जिंदगी में बहुत जरूरी है ये सीखना,
क्या-क्या राज है हमें, अपनी रूह में छुपाना।
कितने हम गलत हैं और कितने हैं हम सही,
सुन लेना चुपके से, बातें करता है खुलेआम ये जमाना।
हर गलती माफ कर देता है ऊपरवाला दयालु भगवान,
पर गलती से भी कभी तुम किसी गरीब को मत रूलाना।

सकारात्मक सोचने की शक्ति

अविनाश पासी

एक व्यक्ति काफी दिनों से चिंतित चल रहा था जिसके कारण वो काफी चिड़चिड़ा तथा तनाव में रहने लगा था। वह इस बात से परेशान था कि घर के सारे खर्च उसे ही उठाने पड़ते हैं, पूरे परिवार की जिम्मेदारी उसी के ऊपर है, किसी न किसी रिश्तेदार के आना-जाना लगा ही रहता है, उसको बहुत ज्यादा आयकर देना पड़ता है आदि आदि। इन्हीं बातों को सोच-सोच कर वह काफी परेशान रहता था तथा बच्चों को अक्सर डांट देता था तथा पत्नी से भी ज्यादातर उसका किसी न किसी बात पर झगड़ा चलता रहता था।

एक दिन उसका बेटा उसके पास आया और बोला पिताजी मेरा होमवर्क करा दीजिए, वह व्यक्ति पहले से ही तनाव में था, उसने बेटे को डांट कर भगा दिया लेकिन जब थोड़ी देर बाद उसका गुस्सा शांत हुआ तो वह बेटे के पास गया तो देखा कि बेटा सोया हुआ है और उसके हाथ में उसके होमवर्क की कॉपी है। उसने कॉपी लेकर देखी और जैसे ही उसने कॉपी नीचे रखनी चाही उसकी नजर होमवर्क के टाईटल पर पड़ी।

होमवर्क का टाईटल था- वो चीजें जो हमें शुरू में अच्छी नहीं लगती लेकिन बाद में अच्छी ही होती हैं इस टाईटल पर बच्चे को एक पैराग्राफ लिखना था जो उसने लिख दिया था। उत्सुकतावश उसने बच्चे का लिखा पढ़ना शुरू किया बच्चे ने लिखा था।

- मैं अपने फाईनल एग्जाम को बहुत धन्यवाद देता हूं क्योंकि शुरू में तो ये बिल्कुल अच्छे नहीं लगते लेकिन इनके बाद छुट्टियां पड़ जाती हैं।
- मैं खराब स्वाद वाली कड़वी दवाईयों को बहुत धन्यवाद देता हूं क्योंकि शुरू में तो यह कड़वी लगती हैं लेकिन ये मुझे बीमारी से ठीक करती हैं।
- मैं सुबह-सुबह जगाने वाली अलार्म घड़ी को धन्यवाद देता हूं जो मुझे हर सुबह बताती है कि मैं जीवित हूं।
- मैं ईश्वर को भी बहुत धन्यवाद देता हूं जिसने मुझे इतने अच्छे पिता दिए क्योंकि उनकी डांट शुरू में तो बहुत बुरी लगती है लेकिन वो मेरे लिए खिलौने लाते हैं, मुझे घुमाने ले जाते हैं और अच्छी-अच्छी चीजें खिलाते हैं और मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे पास पिता है क्योंकि मेरे दोस्त सोहन के तो पिता ही नहीं हैं।

बच्चे का होमवर्क पढने के बाद वह व्यक्ति जैसे अचानक नींद से जाग गया। उसकी सोच बदल गई। बच्चे की लिखी बातें उसके दिमाग में बार-बार घूम रही थी खासकर आखिरी वाली पँक्ति उसकी नींद उड़ गई थी। फिर वह व्यक्ति थोड़ा शांत होकर बैठा और उसने अपनी परेशानियों के बारे सोचना शुरू किया।

मुझे घर के सारे खर्च उठाने पड़ते हैं इसका मतलब मेरे पास घर है और ईश्वर की कृपा से मैं उन लोगों से बेहतर स्थिति में हूं जिनके पास घर नहीं है।

मुझे परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है इसका मतलब है कि मेरा परिवार है और ईश्वर की कृपा से मैं उन लोगों से ज्यादा खुशनसीब हूं जिनके पास परिवार नहीं है और वे दुनियां में बिल्कुल अकेले हैं।

मेरे यहां कोई न कोई मित्र या रिश्तेदार आता-जाता रहता है इसका मतलब है कि मेरी एक सामाजिक हैसियत है और मेरे पास मेरे सुख-दुख में साथ देने वाले लोग हैं।

मैं बहुत ज्यादा आयकर भरता हूं इसका मतलब है मेरे पास अच्छी नौकरी है और मैं उन लोगों से बेहतर हूं जो बेरोजगार हैं और पैसों की वजह से बहुत सी चीजों

और सुविधाओं से वंचित हैं।

हे भगवान तेरा बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे माफ करना, मैं तेरी कृपा को पहचान नहीं पाया। उसके बाद उसकी सोच एकदम बदल गई उसकी सारी परेशानी, सारी चिंता एकदम से जैसे खत्म हो गई। वह भागकर अपने बेटे के पास गया और सोते हुए बेटे को गोद में उठाकर उसके माथे को चूमने लगा और अपने बेटे को और ईश्वर को धन्यवाद देने लगा।

हमारे सामने जो भी परेशानियां हैं हम जब तक उनको नकारात्मक नजरिए से देखते रहेंगे तब तक हम परेशानियों से घिरे रहेंगे लेकिन जैसे ही हम उन्हीं चीजों को, उन्हीं परिस्थितियों को सकारात्मक नजरिए से देखेंगे, हमारी सोच एकदम बदल जाएगी। हमारी चिंताएं, सारी परेशानियां सारे तनाव खत्म हो जाएंगे और हमें मुश्किलों से निकलने के नए-नए रास्ते दिखाई देने लगेंगे।

रास्ते बनाकर रखना

मुनीष भाटिया

मुझे रोकते क्यूँ हो
जिन्दगी जीने के लिए
मैं भी चाहता हूँ
जी भर के जीना,
दुनिया के मेले में
चाहता मैं भी हूँ मस्त होना
मंजिल की ओर कदमताल की
हसरत मेरी भी है !
रास्ते बनाकर रखना
ए परवर दीगारे आलम
ज़िम्मेदारियों का बोझ
बेशक़ रखना बढाकर,
शफ्फाफ रखना इतना कि
बर्दाश्त कर पाऊं
जीने के गम सभी
हँसते सुकून में सारे !
उम्र भर बेरुखी से
खेलता रहा ज़माना
अरमानों से हमारे
कर्म इतना करना,
ए परवर दीगार आलम कि
जग से रुखसत होने पर
कोई अंगारों से ना
खेलने लग जाए !
सुकून की खोज में
गुमशुदा सा इंसान सदा
रहता गफ़लत में हरदम
भागता इधर-उधर,
सुकून तो छिपा है मन में
गर दिल में इश्राक रहे
और खुदा की इबादत में
उम्मीद का दीया थामे रहे !

काश जिंदगी एक किताब होती

रीना

काश, जिंदगी एक किताब होती
पढ़ सकती मैं कि आगे क्या होगा?
क्या पाऊंगी मैं और क्या दिल खोएगा?
कब थोड़ी खुशी मिलेगी, कब दिल रोएगा?
काश, जिंदगी सचमुच किताब होती।
लांघ सकती मैं उन लम्हों को,
जिन्होंने मुझे रूलाया है।
जोड़ती कुछ पन्ने जिनकी यादों ने मुझे हंसाया है,
कितना खोया और कितना पाया है?
हिसाब तो लगा पाती इतना,
काश, जिंदगी सचमुच किताब होती।
वक्त से आंखें चुराकर पीछे चली जाती,
टूटे सपनों को फिर से अरमानों से सजाती,
कुछ पल के लिए मैं भी मुस्कुराती,
काश, जिंदगी सचमुच किताब होती।

सबसे धनी व्यक्ति

संकलित

कार्ल नामक एक धनी भूस्वामी अपनी संपदा के इर्द-गिर्द भ्रमण करता और अपनी अकूत संपत्ति पर स्वयं गर्वित महसूस करता। एक दिन जब वह अपने घोड़े पर सवार होकर अपनी भू-संपत्ति में चहलकदमी कर रहा था तभी उसने एक बूढ़े पट्टाधारक किसान हैंस को देखा। हैंस एक वृक्ष के नीचे बैठा हुआ था जब कार्ल वहां से गुजरा। हैंस बोला, "मैं अपने भोजन के लिए ईश्वर को धन्यवाद देता हूं ।"

कार्ल ने आपत्ति जताई, "यदि यह मुझे सब खाना पड़े तो मुझे धन्यवाद देने जैसा कुछ नहीं लगेगा।"

हैंस ने उत्तर दिया, "ईश्वर ने मेरी आवश्यकतानुसार मुझे सब दिया है और मैं इसके लिए अहसानमंद हूँ ।" बूढ़ा किसान बोला, "यह विस्मयकारी है कि तुम आज आए हो क्योंकि कल रात मुझे एक सपना आया था।" मेरे सपने में एक आवाज़ ने मुझे बताया कि "आज रात घाटी के सबसे धनी व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी।" मुझे नहीं पता कि इसका आशय क्या है परंतु मुझे लगा तुम्हें यह बताना चाहिए।

कार्ल नाक सिकोड़ते हुए बोला, "सपने बकवास होते हैं, और वहाँ से चलता बना परंतु वह हैंस के शब्दों "आज रात घाटी के सबसे धनी व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी।" को नहीं भूल पाया। निश्चित रूप से वह घाटी का सबसे धनी व्यक्ति था इसलिए उस शाम को उसने अपने चिकित्सक को अपने घर पर बुलाया । कार्ल ने चिकित्सक को वह सब बताया जो हैंस ने कहा था। एक सघन जांच के बाद चिकित्सक ने धनी भूस्वामी से कहा "कार्ल तुम घोड़े की भांति मजबूत और स्वस्थ हो। ऐसा कुछ भी नहीं है कि आज रात तुम्हारी मृत्यु हो जाए।"

फिर भी आश्वासन के लिए, चिकित्सक कार्ल के साथ रहा और पूरी रात वे दोनों ताश खेलते रहे। अगली सुबह चिकित्सक अपने घर के लिए निकला और कार्ल ने बूढ़े व्यक्ति के सपने पर उदास होने के लिए क्षमा मांगी।

रात को करीब 9 बजे, एक संदेशवाहक कार्ल के दरवाजे पर आया।

"क्या हुआ?" कार्ल ने पूछा, संदेशवाहक ने बताया "वह वृद्ध हैंस कल रात अपनी नींद में मर गया।"

कुछ भी अपना नहीं

मनमीत कौर

कुछ भी अपना नहीं है, ये घर अपना नहीं है,
ये शहर अपना नहीं है, मां-बाप, भाई-बहन, दोस्त,
कोई भी अपना नहीं।
ये गुलिस्तां भी अपना नहीं है,
हर चीज यहां पराई है,
जिंदगी और मौत भी पराई है।
ये भी कभी हाथ न आई है,
ये शरीर भी अपना नहीं, इसे भी,
पंचतत्व में विधरित और विलीन होना है।
जीवन की हर वस्तु,
ये पैसा ये शान-ओ-शौकत,
सब इक दिन छोड़ना है,

सबसे मुंह मोड़ना है।
कहते हैं बड़े-बूढे तू भी कोई गुरू धार ले,
हो सके तो अपना जीवन सुधार ले,
ये बात किसी की समझ में न आई है,
त्याग और परोपकार हम कर नहीं सकते,
सच्ची खुशी से झोली भर नहीं सकते।
जीवन सूना सा लगता है,
खाली कहीं इक कोना सा लगता है,
परमार्थ कभी किया नहीं, दान कभी दिया नहीं,
सच्ची खुशी सहेजना हर इक के बस की बात नहीं,
भौतिकता में जिए हैं, स्वर्ग कहां से होगा नसीब,
जब कोई काम अच्छा किया ही नहीं।।

सेवानिवृत्ति

श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार का विदाई समारोह

वेदना

सोनू कुमार

रामसिंह अपने परिवार के साथ नई दिल्ली में रहते थे। सरकारी सेवा में रहते हुए उन्होंने अपने दोनों बच्चों को अच्छे से पढ़ाया-लिखाया था। समय बीतने के साथ उनका बड़ा बेटा राहुल एक मल्टीनेशनल कंपनी में लग गया और छोटी बेटी कोमल की शादी अच्छे परिवार में हो गई। रामसिंह अपनी जिंदगी से काफी संतुष्ट थे। रिटायरमेंट के बाद वो अपने गांव चले गये और वहां पर अपने पुश्तैनी मकान में रहने लगे। रिटायरमेंट पर मिलने वाली धनराशि से गांव में उन्होंने अपना घर बना लिया। कुछ समय बाद उन्होंने अपने बेटे राहुल की शादी भी धूमधाम से कर दी। रामसिंह की पत्नी माधुरी भी बड़ी सादगी पसंद और धार्मिक विचारों की थी। दोनों पति-पत्नी गांव में बड़ा सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे थे। कोमल जब भी घर आती तो उसकी हंसी से सारा घर चहक उठता था और राहुल भी अपने परिवार के साथ कार्यालय से छुट्टी लेकर घर आ जाता था, फिर सब मिलकर आनंदित होते थे। एक बार जब रामसिंह के दोनों बच्चे अपने घर लौट गए तो उन्हें एकाएक यह ख्याल आया कि अब मैं और मेरी पत्नी बूढ़े हो चले हैं, क्यों न मैं अपनी संपत्ति अपने दोनों बच्चों के नाम कर दूं। यह विचार उन्होंने अपनी पत्नी के समक्ष रखा तो वो तुरंत इसके लिए राजी हो गई। एक दिन उन्होंने अपने दोनों बच्चों को बुलाया और अपनी संपत्ति को बराबर-बराबर बांट दिया। एक दिन रामसिंह अपनी पत्नी के साथ राहुल के पास रहने गुरुग्राम गये। राहुल की बेटी सान्या को उनके आने की बहुत खुशी हुई क्योंकि राहुल और उसकी पत्नी दोनों नौकरी करते थे तो उनके पास अपनी बेटी के लिये कम समय बच पता था। सान्या अपने दादा-दादी के साथ खूब मस्ती करती, उनसे कहानियां सुनती और उनसे पढ़ाई में भी कुछ नया सीखती थी। कुछ दिनों बाद ही राहुल और उसकी पत्नी के तेवर बदले-बदले नजर आने लगे। कई मौकों पर वह अपने पिता को छोटी-छोटी बातों पर झिड़क देता था। एक बार स्कूल की मासिक परीक्षा में सान्या के ग्रेड कम आने पर राहुल ने अपने पिता को बोला कि आपके ज्यादा लाड़-प्यार देने के कारण ही इसके कम ग्रेड आए हैं और इसका हमारे प्रति बर्ताव भी आपके आने से बदल गया है। उस रात को रामसिंह काफी बेचैन रहा और उसने अपनी पत्नी के साथ अगली सुबह वहां से जाने का मन बनाया। अगले दिन दोनों वहां से अपनी बेटी कोमल के पास जयपुर चले गए। अपने दादा-दादी के जाने पर सान्या को बड़ा दुःख हुआ। कोमल का पति जयपुर यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर था और उसको परिसर में बड़ा सरकारी आवास मिला हुआ था। वहां जाने पर रामसिंह अपनी पत्नी के साथ पीछे वाले कमरे में रहने लग गए ताकि कोमल की निजी जिंदगी में कोई दखलंदाजी न हो। वहां भी वो दोनों अपने दोता-दोती के साथ आनंदमय जीवन व्यतीत करने लगे। एक शाम कोमल को अपने पति के साथ एक पार्टी में जाना था। वो अपनी अलमारी में सोने का हार ढूंढ रही थी | काफी देर ढूंढने पर जब उसे वह नहीं मिला तब उसके मन में यह ख्याल आया कि जरुर मेरे माता-पिता ने यह सोने का हार चुराया होगा। उसने बिना आव-ताव देखे अपने माता-पिता के बैग खंगालने शुरू कर दिए और जोर-जोर से सोने का हार न मिलने की बात कहने लगी। कुछ देर बाद वो वहां से पांव पटक कर फिर से अपनी अलमारी के पास चली गई और उसे थोड़ी देर बाद ही वो सोने का हार मिल गया। फिर वो शर्मिंदा होकर अपने माता-पिता से अपने किए की माफ़ी मांगने आई। माधुरी मन-मन में ही रोने लगी और सोचने लगी कि जिन बच्चों को हमने पालपोस कर बड़ा किया वो आज हमारे ऊपर ही चोरी का शक कर रहे हैं। रामसिंह और उसकी पत्नी को संपत्ति के बंटवारे का लिया गया निर्णय गलत लगने लगा। अगली सुबह दोनों वहां से बिना किसी को बताए अपने गांव लौट आए और अपने पुश्तैनी मकान में अपना बचा हुआ जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत करने लगे।

जनसाधारण और उपभोक्ता सुरक्षा कानून

निशा ढींगरा

कई सारी सामग्रियां प्रस्तुत करने वाले व्यवसाय अधिक लाभ की आशा से निम्न स्तर के उत्पादन प्रस्तुत करते हैं। उन घटिया गुणवत्ता की सामग्रियों की खरीद से साधारण जनता को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है परंतु विरोध करते समय न तो वे कंपनियां होती हैं और न ही विक्रेता। इसीलिए जनसाधारण के हित की रक्षा हेतु सरकार ने उपभोक्ता सुरक्षा कानून बनाया है।

वास्तव में उपभोक्ता कहने से हम क्या समझते हैं:

साधारण शब्दों में इस प्रश्न का उत्तर यह है कि उपभोक्ता सुरक्षा कानून के तहत कोई भी सामग्री या सेवा क्रय करने वाला व्यक्ति उपभोक्ता है परंतु हमें यह भी समझना चाहिए जो व्यक्ति पुन: बेचने के लिए व्यावसायिक उद्देश्यों से वस्तुओं का क्रय करता है वह उपभोक्ता नहीं कहलाता।

उपभोक्ता सुरक्षा कानून क्या है?

भारत सरकार ने उपभोक्ताओं की सुरक्षा हेतु सन् 1986 में उपभोक्ता सुरक्षा कानून पारित किया। सन् 1987 में उपभोक्ता सुरक्षा नियमावली-1987 के नाम में एक और कानून प्रस्तुत किया गया। इस कानून के तहत उपभोक्ताओं की सुरक्षा हेतु भारत सरकार ने आवश्यक अनुष्ठान या न्यायालय गठन किए हैं वे हैं:

1. केंद्रीय उपभोक्ता सुरक्षा समिति
2. राज्य उपभोक्ता सुरक्षा समिति
3. उपभोक्ता अदालत

उपभोक्ता अदालत

(क) राज्य सरकारों द्वारा हर जिले में स्थापित जिला फोरम।

(ख) राज्य आयोग

(ग) राष्ट्रीय आयोग

एक उपभोक्ता किन परिस्थितियों में उपभोक्ता अदालत में जा सकता है

यदि उपभोक्ता द्वारा खरीदने वाली सामग्री निम्न स्तर की हो, गुणवत्ता में कमी या किसी सामग्री की गारंटी अवधि से पहले खराब होने या कार्य न करने पर हम उपभोक्ता अदालत में जाकर जुड़ी हुई कंपनी या व्यवसायी से नुकसान की भरपाई की मांग कर सकते हैं।

उपभोक्ता अदालतों में इस तरह के मुकदमों का विचार जिला फोरम में किया जाता है। जिला फोरम के विचारों से यदि हम संतुष्ट नहीं होते हैं तो हम राज्य उपभोक्ता सुरक्षा के दरवाजा खटखटा सकते हैं। राज्य आयोग के खिलाफ हम केंद्र उपभोक्ता सुरक्षा आयोग के पास जा सकते हैं। इसी तरह यदि एक उपभोक्ता केंद्रीय आयोग के निर्णयों से असंतुष्ट है तो वह सर्वोच्च न्यायालय के पास जा सकता है।

अंत में यह कहना उचित होगा यदि आम जनता स्वयं जागरूक होगी तब जाकर मुनाफाखोरी करने वाले व्यवसायी तथा प्रतिष्ठान उन्हें ठग नहीं सकेंगे। आज वास्तविकता यह है कि शहर के लोगों में कुछ हद तक, परंतु गांव के लोगों में आज जागरूकता का अभाव देखने को मिलता है। जिससे मुनाफाखोरी करने वाले असामाजिक प्राणियों को उन्हें ठगने में आसानी होती है। अत: न केवल सरकारी अपितु व्यक्तिगत स्तर पर हमें सतर्क होने के साथ-साथ समाज में इस कानून की पहुंच को बढ़ाने का कार्य करना होगा।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

कोरोना कविता

अमरदीप सिंह

पहली बार तू आया कोरोना,
इस दुनिया को थामा था,
है संतुलन तू भी कुदरत का,
देर से हमने ये जाना था।
विदेशी संस्कृति अपना ली थी हमने,
हाथ रोज मिलाते थे,
तूने विश्व में भारतीय संस्कृति का मान बढ़ाया,
जब लोगों ने नमस्ते अपनाया।
पेड़ काटकर धरती के, हमने अपना घर बसाया,
तड़पते रहे हम सांसों को,
तूने उनका महत्व समझाया।
थम सी गई ये दुनिया,
हर कोई चारदीवारी में बंद था,
सबने साथ मिलकर खाना खाया,
हमें परिवार का मोल समझ आया।
नफरत की खेती थी सरहदों पर,
हथियारों में अपना सब लुटाया,
जरूरत थी हमें अस्पतालों की, तूने हमें ये बताया।
ना जाने कितनों की आबरू लुटती थी,
कितनों के घर बिगड़ते थे,
तेरे आने भर से इस दुनिया में,
अखबारों में अपराध के पन्ने गुम थे।
स्कूल के भारी बस्तों से,
घुटता बच्चों का दम था,
लौटा उनका बचपन फिर से,
खुश उन्हें देख हर मां-बाप का मन था।
हर कोई जिंदगी की दौड़ में व्यस्त था,
पैसे की दौड़ में अंधा था,
आने से तेरे समझ में आया,
स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन था।
बना कंक्रीट के जंगल हमने,
जीव-जंतुओं का बसेरा उजाड़ा था,
मिली आजादी उन बेजुबानों को,
और इंसान पिंजरे में बंद था।
कर दिए खर्च करोड़ों-अरबों हमने,
धरती के पर्यावरण बचाने को,
तूने दिखा दिया इस जग को,
थामना था बस हमें अपने ऐश-आरामों को।
भारतीय वस्तुओं को भूल सब,
विदेशी ब्रांड में मशगूल थे,
स्वदेशी को अब हमने अपनाया,
मेक इन इंडिया विश्व पटल पे छाया।
अब जान गए तुझे कोरोना,
जीना तेरे साथ सीख गए हम,
चाहे रोज बदले तेरे चेहरे, अब डरते नहीं तुझसे हम।।

जीवन का प्रबंधन

अंकित

जीवन का प्रबंधन करने को, जीवन चला जाता है।
और फिर जब, अंतिम श्वास की तरफ बढ़ता है मनुष्य,
जीवन रहता नहीं है यह निर्णय लेने को कि
जीवन के इस प्रबंधन का क्या अर्थ निकला
क्या पाया? क्या खोया?
यह जो जीवन की धारा है
इसका अर्थ जब जीवन,
भर समझ नहीं आता है
तब जीवन व्यर्थ हो जाता है।
और बस जीवन का प्रबंधन करने को
जीवन चला जाता है।

आत्म समर्पण

कुसुम लता

ए खुदा, मुझे तू इतना उम्मदराज ना करना,
मेरे बोझ से मेरे अपनों को नाराज ना करना।
तू सुन रहा है ना, जब तक हूं मैं काबिल सभी के,
इस काबिल कि, उम्र पर मेरी ऐतराज न हो अपनों का।
इस उम्र ने कई दौर देखे,
कुछ रूक कर, कुछ दौड़कर,
आज थम गए हैं कदम मेरे,
दुनिया के नए दौर देखकर।
स्मरण आते हैं उन नन्हे कदमों संग,
धीरे उठते मेरे कदम,
आज ऐतराज है उन्हें, मेरी धीमी चाल से।
इतनी तेजी से बदल गया रिश्ता मेरी रूकती रफ्तार से,
मेरे अपनों के आगे बढ़ने में,
मैं रूकावट बन गई।
हमने हर ख्वाहिशें पूरी करने की कोशिश की बिना थके,
आज वे थक जाते हैं,
सुनने में, सिर्फ जिक्र उन कोशिशों का।
जब शाम ढलती थी, हाथों में उपहार ले लौटती थी मैं,
आज जब शाम ढलती है उम्र की,
बस इंतजार है सबके लौटने का।
यूं ही आज मन सोचता है,
सांसें रूक जाती थी मेरी,
उन्हें खोने के ख्याल से।
आज सोचती हूं कब सांसें रूक जाए मेरी, क्या ये ख्याल आता होगा?
सजोती हूं हर वो चीज,
जो मन मारकर जोड़ी थी हमने,
आज वे यादें बन गई हैं,
गवाह मेरी ढलती शाम का।
हमने सिर्फ उम्रभर कमाया और गंवाया अपने आप को,
आज उम्र भी गंवाई और सिर्फ अकेलापन कमाया।
मन है निराश यह सोचकर कि क्या,
ढलती शाम इतनी अकेली होगी,
क्या अपनों का साथ भी एक पहेली होगी।
खुदा ने पलटकर पूछा ए,
मन क्यों हो तुम निराश,
कर्म तेरे, प्रार्थना तेरी,
मैं तो बस पूरी करूं हर आस।
मुझे भुलाकर तूने अपनों की खातिर सिर्फ धन कमाया,
तेरी उम्र से नहीं इन्हें है ऐतराज तेरे प्रति समर्णण से
चल लौट आ मेरी दुनिया में, कर मुझे सब अर्पण
कर मुझमें आत्म समर्पण,
आत्म समर्पण, आत्म समर्पण।।

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और देवनागरी का प्रचार आवश्यक है।
- लाला लाजपत राय

खुशनुमा और सफल जिंदगी जीने के तरीके

संकलित

1. **ज्यादा से ज्यादा मुस्कुराएं**

ज्यादा से ज्यादा मुस्कुराने से आपकी जिंदगी की गुणवत्ता में सुधार होगा आपको सिर्फ मुस्कुराना होगा और यकीन मानिए इससे आपकी जिंदगी पहले से अच्छी हो जाएगी। कई लोग सुबह 5 मिनट तक लगातार मुस्कुराते हैं ऐसा करने से उनका सारा दिन अच्छा निकलता है। हमेशा जिंदगी में मुस्कुराते रहिए।

2. **जिंदगी को ज्यादा गंभीरता से न लें**

जिंदगी को ज्यादा गंभीरता से लेने की जरूरत नहीं है, जिंदगी बहुत छोटी है अगर आपने इसको ज्यादा गंभीरता से लिया तो यह आपसे आपकी खुशी मजे और उत्पादकता सब छीन लेगी, गंभीरता तनाव बढ़ा देती है और यह आपकी रचनात्मकता व नए पन को भी समाप्त कर देती है।

3. **अपने विचारों को सकारात्मक रखें**

आपने बहुत लोगों को साधारण सी लगने वाली बात कहते हुए सुना होगा कि चिंता मत करो और सकारात्मक सोचो। ज्यादातर लोग इस बात को नजरअंदाज करते हैं। दरअसल वे इन बातों की गहराई को नहीं समझ पाते।

4. **गलती माफ करने की योग्यता को बढ़ाए**

माफ करने की योग्यता एक मानसिक, भावुक अध्यात्मिक प्रक्रिया जो आपकी नाराजगी और आपके गुस्से से आपको आजाद करती है माफ करने की योग्यता बहुत कम व सुलझे हुए लोगों में होती है। गुस्सा और नाराजगी करने से आप एक अच्छे बनते हुए रिश्ते को गवाँ सकते हैं।

5. **अपनी भावनाओं पर काबू करना सीखें**

जिंदगी बहुत जटिल है और लोग इससे भी ज्यादा जटिल हैं। कहीं हमें जिंदगी में बहुत मुश्किल और खराब लम्हों से गुजरना पड़ता है। यह लम्हे हमें तनाव में डाल सकते हैं। अगर आपने ऐसी स्थिति में अपने आप पर नियंत्रण नहीं रखा तो आप लंबे समय के लिए अवसाद में जा सकते हैं। इसलिए आपको अपने आप ही इन मुश्किल हालातों का सामना करके आगे बढ़ने का जज्बा रखना होगा।

6. **आप वह करें जो आपको पसंद है**

बहुत सारे लोग अपनी पूरी जिंदगी अपने काम में व्यस्त होने के कारण अपने शौक गवाँ देते हैं। लोगों को चाहिए कि अपने काम के साथ-साथ अपनी पसंद के काम भी करते रहें ताकि आप अपनी जीवन का पूरा आनंद ले सके। आप वही काम करें जो आपको पसंद है जिससे आपको खुशी मिलती है।

7. **अपने दोस्तों को सावधानी से चुनें**

यदि आप अच्छी जिंदगी जीना चाहते हैं तो आपको अपनी जिंदगी में अच्छे लोगों का साथ चाहिए। यदि आप बेईमान, निर्दयी लोगों से घिरे हैं तो वह आपको बहुत बुरे तरीके से धोखा दे सकते हैं, जिससे आपकी जिंदगी बहुत तनाव से भर सकती है और यदि आपके मित्र वफादार, दयालु और बुद्धिमान हैं, तो आपकी जिंदगी सुख से भरपूर होगी, इसलिए अपने मित्र सावधानी से चुनें।

8. **लिफाफे में शगुन देने के साथ-साथ हमें ये परंपरा भी शुरू करनी है**

हम लोग जब किसी शादी के समारोह में जाते हैं तो पैसों का एक लिफाफा जरूर देते हैं पर जब अपना कोई रिश्तेदार या मित्र अस्पताल में जिंदगी और मौत से लड़ रहा होता है और हम देखने जाते हैं तब कोई लिफाफा नहीं ले जाते जबकि उस समय मरीज के घर वालों को पैसों की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। आओ हम सब मिलकर ये नया परंपरा शुरू करें।

योग से सहयोग

राम कुमार

योग है एक उपयोगी जीवन पद्धति,
मानव जीवन को मिलती इससे सदगति।
योग से होता सबका कल्याण,
होती कर्म-अकर्म की पहचान।
यह तो है समता और समत्व,
जनमानस में सुविचारों का घनत्व।
योग से होती है जीवन में सुगमता,
लक्ष्य प्राप्ति हेतु बढ़ती उद्यमता।
यह है एक संतुलित बहाव,

विचलित नहीं करते उतार-चढ़ाव।
चिंतामुक्त और सकारात्मक बनता दृष्टिकोण,
स्वार्थ और अभिमान हो जाते हैं गौण।
स्वास्थ्य और सुरक्षा का है उत्तम स्रोत,
जीवन बनता शक्ति से ओत-प्रोत।
आओ हम सब योग को अपनाएं,
मन को शांत और शरीर को स्वस्थ बनाएं।

शांति चित्र

संकलित

एक बार एक राजा ने उस कलाकार को पुरस्कार देने की घोषणा की जो शांति का सर्वश्रेष्ठ चित्र बना सके। कई कलाकारों ने प्रयास किया। राजा ने सभी चित्रकलाओं को देखा लेकिन राजा को केवल दो चित्रकला ही पसंद आई और उसे उनमें से एक का ही चयन करना था।

एक चित्र शांत झील का था। झील के चारों ओर शांत खड़े पर्वतों का उत्तम प्रतिबिंब बन रहा था। रूईनुमा सफ़ेद बादलों के साथ ऊपर नीला आकाश था। जिसने भी यह चित्र देखा उन्हें लगा कि यह शांति का सर्वोत्तम चित्र था।

दूसरे चित्र में भी पर्वत थे। लेकिन वे ऊंचे-नीचे और साफ थे। ऊपर प्रचंड आकाश था, जहां से वर्षा और बिजली चमक रही थी। पर्वतों के नीचे की ओर एक निर्मल झरना बह रहा था। यह प्रथम दृष्टया शांतिपूर्वक प्रतीत नहीं हो रहा था। लेकिन जब राजा ने इसे ध्यान से देखा तो पाया कि झरने के पीछे चट्टान की दरार में एक छोटी सी झाड़ी उग रही थी। उस झाड़ी में एक मादा चिड़िया ने अपना घोंसला बना रखा था। वहां उग्र जल के प्रवाह के बीच परम शांति में वह मादा चिड़िया अपने घोंसले में शांत बैठी हुई थी।

राजा ने दूसरे चित्र को चुना और कहा, शांति का तात्पर्य केवल वह स्थान मात्र नहीं है जहां कोई कोलाहल, संकट या कठिन परिश्रम हो। शांति का मतलब है- विपरीत परिस्थितियों के बीच भी अपने हृदय में शांति बनाए रखना।

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
स्वामी दयानंद

गणतंत्र दिवस 2021 पर 'नकद पुरस्कार' एवं 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम	क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम
1	अमृत विश्वास कौर	व.ले.प.अ.	29	सुरिन्द्र कुमार	स.ले.प.अ.
2	अशोक कुमार	व.ले.प.अ.	30	विवेक	स.ले.प.अ.
3	भूपिन्द्र सिंह	व.ले.प.अ.	31	अल्पना गुप्ता	सहायक पर्यवेक्षक
4	दिनेश शर्मा	व.ले.प.अ.	32	अनिल कुमार मलिक	सहायक पर्यवेक्षक
5	हरभजन सिंह	व.ले.प.अ.	33	गुड्डी देवी	सहायक पर्यवेक्षक
6	कैलाश कुमारी	व.ले.प.अ.	34	जगदीश मलिक	सहायक पर्यवेक्षक
7	कुलदीप कौशिक	व.ले.प.अ.	35	निशा ढिंगरा	सहायक पर्यवेक्षक
8	मनोज कुमार	व.ले.प.अ.	36	राजकुमार तागड़ा	सहायक पर्यवेक्षक
9	राकेश कुमार	व.ले.प.अ.	37	सुनीता ढल	सहायक पर्यवेक्षक
10	रमेश सैनी	व.ले.प.अ.	38	लाखा राम	व.ले.प.
11	रीतू शर्मा	व.ले.प.अ.	39	अनूप कुमार	व.ले.प.
12	रोहित तलवार	व.ले.प.अ.	40	आशा रानी	व.ले.प.
13	रोहताश सिंह	व.ले.प.अ.	41	चुन्नी लाल	व.ले.प.
14	संजय अग्रवाल	व.ले.प.अ.	42	जगदीश चन्द	व.ले.प.
15	सतीश कुमार (बंसल)	व.ले.प.अ.	43	जगमोहन सिंह	व.ले.प.
16	सुषमा रानी	व.ले.प.अ.	44	मीनाक्षी भगत	व.ले.प.
17	अशीम शर्मा	स.ले.प.अ.	45	ओझा देवल दिवेश कुमार	व.ले.प.
18	अशोक सिंगला	स.ले.प.अ.	46	प्रनव	व.ले.प.
19	अश्विनी सूद	स.ले.प.अ.	47	फूल चन्द्र प्रजापति	व.ले.प.
20	जतिन्द्र बंसल	स.ले.प.अ.	48	प्रियंका	व.ले.प.
21	के.सी. पंजियार	स.ले.प.अ.	49	राहुल	व.ले.प.
22	कपिल देव वर्मा	स.ले.प.अ.	50	सादिक	व.ले.प.
23	ललित	स.ले.प.अ.	51	शिखा	व.ले.प.
24	सचिन गर्ग	स.ले.प.अ.	52	सुंदर सिंह	व.ले.प.
25	सत्यवीर	स.ले.प.अ.	53	अमरदीप	ले.प.
26	सोनू कुमार	स.ले.प.अ.	54	हरिन्द्र सिंह	ले.प.
27	सुभाष ठाकुर	स.ले.प.अ.	55	निखिल गुप्ता	ले.प.
28	सुनील पंघाल	स.ले.प.अ.	56	विजय	लिपिक

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम	क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम
57	अभिषेक यादव	डी.ई.ओ.	65	मोहन चन्द्र	दफ्तरी
58	अरविन्द मान	डी.ई.ओ.	66	गौतम	एम.टी.एस.
59	सोनू	डी.ई.ओ.	67	मेहरबान सिंह	एम.टी.एस.
60	करतार सिंह	डी.ई.ओ.	68	मोहन चन्द्र-III	एम.टी.एस.
61	प्रवीन कुमार	डी.ई.ओ.	69	निशा	एम.टी.एस.
62	सचिन	डी.ई.ओ.	70	रतन	एम.टी.एस.
63	रामभज	कैंटीन स्टाफ	71	सलोचना	एम.टी.एस.
64	उमेद सिंह	कैंटीन स्टाफ	72	विशाल यादव	एम.टी.एस.

गणतंत्र दिवस 2021 पर 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम	क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम
1	अमित सिंह	व.ले.प.अ.	20	हर्षित बाथम	स.ले.प.अ.
2	दीपक अरोड़ा	व.ले.प.अ.	21	जोगिन्द्र	स.ले.प.अ.
3	गुरू स्वरूप बंसल	व.ले.प.अ.	22	कुलविन्द्र सिंह	स.ले.प.अ.
4	जगमाल सिंह राठी	व.ले.प.अ.	23	नवीन कुमार शर्मा	स.ले.प.अ.
5	महाबीर सिंह	व.ले.प.अ.	24	पंकज भारद्वाज	स.ले.प.अ.
6	पवन कुमार	व.ले.प.अ.	25	प्रवीन मिश्रा	स.ले.प.अ.
7	रजनीश जोनेजा	व.ले.प.अ.	26	राहुल गुप्ता	स.ले.प.अ.
8	रमेश कुमार	व.ले.प.अ.	27	राहुल कुमार	स.ले.प.अ.
9	रविन्द्र सिंह	व.ले.प.अ.	28	रमेश कुमार	स.ले.प.अ.
10	रेनू चावला	व.ले.प.अ.	29	रीतू	स.ले.प.अ.
11	रोशन लाल शर्मा	व.ले.प.अ.	30	साची	स.ले.प.अ.
12	संजय कुमार ढींगरा	व.ले.प.अ.	31	संजय शर्मा	स.ले.प.अ.
13	विश्वजीत सिंह	स.ले.प.अ.	32	संसार सागर मलिक	स.ले.प.अ.
14	अंकित खोखर	स.ले.प.अ.	33	तिलक राज	स.ले.प.अ.
15	अशोक कुमार मीणा	स.ले.प.अ.	34	विनिल अरोड़ा	स.ले.प.अ.
16	दर्शन लाल	स.ले.प.अ.	35	कृष्ण सिंह	हिंदी अधिकारी
17	देवेन्द्र सिंह मीणा	स.ले.प.अ.	36	हरीश कुमार कक्कड़	पर्यवेक्षक
18	दिव्यांशु श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	37	नन्द लाल	सहायक पर्यवेक्षक
19	गिरवर सिंह	स.ले.प.अ.	38	नवीन कुमार	सहायक पर्यवेक्षक

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम	क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम
39	रोहित शर्मा	सहायक पर्यवेक्षक	64	दीपक	व.ले.प.
40	संजीव कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	65	कुलदीप सिंह	व.ले.प.
41	हरजीत सिंह	कल्याण सहायक	66	संदीप	व.ले.प.
42	विजय कुमार	व.ले.प.	67	शिशपाल	लिपिक
43	राजेश कुमार	व.ले.प.	68	गौतम कुमार	डी.ई.ओ.
44	अमनदीप बतरा	व.ले.प.	69	गोबिन्द कुमार	डी.ई.ओ.
45	अमित लाठर	व.ले.प.	70	मंजीत सिंह	डी.ई.ओ.
46	अंकुश गोयल	व.ले.प.	71	मुकेश रानी	डी.ई.ओ.
47	गोविन्द सिंह	व.ले.प.	72	नीरज कुमार	डी.ई.ओ.
48	जसवीर सिंह	व.ले.प.	73	रंजीत कुमार	डी.ई.ओ.
49	जोगिन्द्र	व.ले.प.	74	राम कुमार	डी.ई.ओ.
50	महेन्द्र सिंह यादव	व.ले.प.	75	शमशेर	डी.ई.ओ.
51	निखिल पराशर	व.ले.प.	76	तुषार मलिक	डी.ई.ओ.
52	नितेश	व.ले.प.	77	अनिल कुंडु	पी.ए.
53	नितिन गोस्वामी	व.ले.प.	78	शुभम वर्मा	आशुलिपिक
54	पंकज कुमार	व.ले.प.	79	भूपिन्द्र सिंह	कैंटीन स्टाफ
55	प्रवीन कुमार अरोड़ा	व.ले.प.	80	सतपाल	एम.टी.एस.
56	पिताम्बर दत्त	व.ले.प.	81	महेंन्द्र प्रसाद	एम.टी.एस.
57	राहुल नंदाल	व.ले.प.	82	मंजीत	एम.टी.एस.
58	राजेश शर्मा	व.ले.प.	83	प्रदीप	एम.टी.एस.
59	राम गोपाल	व.ले.प.	84	प्रेम सिंह	एम.टी.एस.
60	राम अवतार	व.ले.प.	85	राजेश कुमार	एम.टी.एस.
61	रोहताश	व.ले.प.	86	शकुंतला	एम.टी.एस.
62	सुखदेव सिंह	व.ले.प.	87	सुखदेव सिंह	एम.टी.एस.
63	उत्पल शाह	व.ले.प.	88	विक्रम	एम.टी.एस.

दिनांक 14.09.2020 से 25.09.2020 के दौरान हिंदी पखवाड़ा में पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी

प्रतियोगिता का नाम	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
20,000 शब्दों का दावा	रमेश कुमार सिंह, स.ले.प.अ. अमित लाठर, व.ले.प.	हेमन्त मनुजा, व.ले.प. मनमीत कौर, व.ले.प. दीपक कुमार, व.ले.प.	विनोद कुमार, व.ले.प. प्रणव कुमार, व.ले.प. राम कुमार, डी.ई.ओ.

सेवानिवृत्ति

समय अपनी गति से चलता रहता है। जिन साथियों के साथ हम एक साथ कार्य करते हैं जिनकी कार्यक्षमता और अनुभव से लाभान्वित होते हैं, उनके दूर जाने का अर्थात् सेवानिवृत्त होने का समय आ ही जाता है। इस कार्यालय में उनके द्वारा की गई सेवा तथा मार्गदर्शन के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं और उनकी दीर्घायु तथा भावी जीवन के लिए सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	कपिल कुमार सचदेवा	स.ले.प.अ.	06.08.2020
2	जय चंद मेहरा	स.ले.प.अ.	31.08.2020
3	सुदर्शन सिंह	व.ले.प.	31.10.2020
4	अशोक कुमार वसुजा	व.ले.प.अ.	30.11.2020
5	दलजीत सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2021
6	रामफल सिंह घंगस	व.ले.प.	28.02.2021
7	देवेन्द्र मोहन सिंह	व.ले.प.अ. (वा.)	30.04.2021
8	सीता राम यादव	व.ले.प.अ.	31.05.2021
9	जगमाल सिंह राठी	व.ले.प.अ.	30.06.2021
10	अशोक कुमार शर्मा	पर्यवेक्षक	31.07.2021
11	मुनीष कुमार लीखा	व.ले.प.अ.	31.08.2021
12	मुनीष कुमार गुप्ता	स.ले.प.अ.	31.08.2021

श्रद्धांजलि

जब अचानक किसी साथी को हमसे किसी अदृश्य शक्ति द्वारा छीन लिया जाता है तो हमें विधि का विधान मानकर उसकी जुदाई की पीड़ा सहनी पड़ती है। अपने बिछुड़े हुए साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उस असीम शक्ति से हम उनकी आत्मा की शान्ति तथा विपदा की घड़ी में उनके प्रियजनों को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

क्र.	नाम (सर्व श्री)	पदनाम	निधन की तिथि
1	विजय कुमार	व.ले.प.	05.05.2021
2	चुन्नी लाल	व.ले.प.	13.06.2021
3	शिव शंकर कुमार चौधरी	व.ले.प.अ.	30.06.2021

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

—

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा,
प्लॉट नं. 4-5, सैक्टर 33 बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़
www.aghry.nic.in
https://cag.gov.in/ag/haryana/hi